संस्थापित १८६७ ई.

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

200वीं महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024

आजीवन शुल्क ₹ २,५००
वार्षिक शुल्क ₹ २००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ ५.००

वर्ष : १२६ : अंक ०७ १५ फरवरी २०२४ (गुरुवार) माघ शुक्लपक्ष षष्ठी सम्वत् २०८० ● दयानन्दाब्द १६६ वेद व मानव सृष्टि सम्वत्: १९६०८५३१२४

महर्षि दयानन्द का व्यक्तित्व

–आचार्य विवेक आर्य

महर्षि दयानन्द अपने समकालीन सभी व्यक्तियों की अपेक्षा शारीरिक, बौद्धिक एवं अध्यात्मिक दृष्टि से सर्वोच्च शिखर पर थे वे शारीरिक एवं बौद्धिक दोनों दृष्टियों से विशालकाय थे और अपने समकालीन लोगों में सर्वश्रेष्ठ थे। भारत में रहने वाले सभी बुद्धिजीवी एवं विद्वान उनके सामने हर प्रकार से बौने थे। कारण की सुदृढ़ माता-पिता के घर जन्म लेकर वे जीवनभर ब्रह्मचारी रहे। वे पारिवारिक एवं सांसारिक चिंताओं से सदा मुक्त रहे। उनके ब्रम्हचर्य का प्रभाव ही था कि हिमालय की भयंकर ठण्ड हो अथवा राजस्थान की तपती रेत उनके शरीर पर बहुत कम वस्त्र होते थे पर उन्हें कभी कोई कठिनाई नही हुई।

६ फीट ९ इंच लम्बे, लोहे जैसा सुदृढ़ शरीर, हेरक्यूलिस जैसी शक्ति के स्वामी, चट्टान जैसी दृढ़ इच्छाशक्ति वाले, केवल एक लंगोटधारी पहनने वाले स्वामीजी ने क्रोधित भीड़, किराये के गुण्डों, मतान्ध लोगों तथा कातिलों का सामना किया और कभी विचलित नही हुए।

महर्षि दयानन्द की शारीरिक क्षमता से सम्बंधित कुछ घटनायेः–

१- आगरा में १८६३-१८६५ दो वर्ष की अवधी में प्रायः आगरा से मथुरा की ३६ मील की दूरी मात्र ३ घंटे में पैदल तय कर लिया करते थे।

२- १८६७ में चासी बुलंदशहर के नामी पहलवान ओंकारनाथ बोहरा ने स्वामीजी के पैर दबाने की प्रार्थना की। उसने पाया कि स्वामीजी के पैर लोहे की तरह मजबूत थे।

३- १८६९ में कुछ पहलवान फर्रुखाबाद में स्वामीजी के पास आये और बोले कि यदि आप व्यायाम करें तो बहुत शक्तिशाली हो जायेंगे। स्वामीजी ने अपनी भीगी लंगोटी उनको देकर एक बूंद पानी निकाल देने को बोला पर उनमें से कोई सफल न हुआ, फिर स्वामीजी ने उसी लंगोटी को निचोड़ा तो पानी टपकने लगा।

४- १८७७ जालंधर में सरदार विक्रम सिंघ ने स्वामीजी से कहा कि हमने शास्त्रों में पढ़ा है कि ब्रह्मचर्य से महान शक्ति प्राप्त होती है, हम एक ब्रह्मचारी की शक्ति देखना चाहते हैं। स्वामीजी तब कुछ नही बोले। विक्रम सिंघजी उठ खड़े हुए और बग्घी में बैठ गए जिसे दो शक्तिशाली घोड़े खींच रहे थे। साईस ने लगाम खींचा, घोड़ों को चाबुक मारे पर वे हिले तक नही। वो चाबुक मारता रहा, लगाम खींचता रहा पर कोई प्रभाव न हुआ। विक्रम सिंघ ने पीछे देखा तो आश्चर्यचकित हो गए, चार पहियों की बग्घी का एक पहिया स्वामीजी ने पकड़ा हुआ था। स्वामीजी मुस्कुराये और विक्रम सिंघ ने पूछा कि क्या अब आप एक ब्रह्मचारी की शक्ति से आश्वस्त हैं?

५- स्वामीजी के जीवनी लेखक समाज सुधारक दीवान हरविलासजी सारदा ने भी स्वामीजी के बल की एक घटना अपनी आँखों से स्वयं देखी थी। अजमेर में सेठ गजमल के नोहरे में स्वामीजी के प्रवचनों हो रहे थे। एक दिन प्रवचन के बाद २०-२५ व्यक्तियों को छोड़कर सभी श्रोता चले गए। स्वामीजी भी उठे। जब सभी मुख्य द्वार पर पहुंचे तो देखा कि भारी-भरकम मुख्य द्वार बंद है। कुछ लोग आगे बढ़े और स्वामीजी को निकालने के लिए द्वार खोलने लगे। लगभग १२-१५ व्यक्तियों ने अपनी पूरी शक्ति लगा दी पर दरवाजा हिला तक नही। दीवानजी के पिताजी (दीवानजी सदैव पिता के साथ प्रवचन सुनने जाया करते थे) व अन्य ४-५ लोग स्वामीजी के पास खड़े होकर अन्य लोगों के प्रयास को देख रहे थे। जब द्वार ने खुलने से मना कर दिया तब स्वामीजी ने उनको हटने के लिए बोला और एक पैर लकड़ी के उस द्वार पर जमाया और एक ही झटके में द्वार खोल दिया। उनकी शक्ति देखकर सभी आश्चर्य और श्रद्धा से भर गए।

महर्षि का अद्भुत साहस और निर्भयताः–

१- १८६७ फर्रुखाबाद में ठाकुरदास व अन्य लोगों ने कुछ गुण्डों को स्वामीजी पर आक्रमण करने के लिए भेजा। सेठ जगन्नाथ प्रसाद ने स्वामीजी से किसी सुरक्षित स्थान पर चले जाने का निवेदन किया। स्वामीजी ने कहा कि मेरे जीवन पर कितने प्राणघातक आक्रमण हुए हैं पर मैं यहाँ से वहां निशस्त्र घूमता हूँ, आप मेरी रक्षा कब तक करेंगे?

२- १८६९ कानपुर में कुछ लोगों ने स्वामीजी पर आक्रमण किया, स्वामीजी ने एक व्यक्ति की लाठी छीन ली और उसे गंगा में धक्का दे दिया और पास के पेड़ से शाखा तोड़कर कुछ व्यक्तियों को धूल चटा दी, और बोले "तुम लोग मुझे निरा साधु ही मत समझना।"

३- फर्रुखाबाद में २ मई १८७६ को रेवेरेन्ड लूक्स ने स्वामीजी से कहा कि यदि

क्रमशः........७ पर

वेदामृतम्

सुदक्षो दक्षैः क्रतुनासि सुक्रतुः, अग्ने कविः काव्येनासि विश्ववित् ।
वसुर्वसूनां क्षयसि त्वमेक इद्, द्यावा च यानि पृथिवी च पुष्यतः ।।

ऋ० १०.९१.३

हे परमपिता परमेश्वर ! तुम दक्षों से 'सुदक्ष' बने हुए हो। दक्ष शब्द में दक्षता, आत्मबल, चातुर्य, किसी भी कार्य को तदुचित निपुणता के साथ करने की शक्ति, वृद्धि आदि विविध बल संगृहीत हैं। तुम इन समस्त बलों से सुवली वने हुए हो। तुम्हारे ये बल शुभ हैं, मनुष्य के उपकारक हैं, किसी को उद्वेजित करनेवाले नहीं हैं। हे देवाधिदेव ! तुम 'ऋतु' से 'सुक्रतु' हो। वैदिक ऋतु शब्द में ज्ञान, मेधा, प्रज्ञा, कर्म, यज्ञ, संकल्प आदि अयं निहित है। शुभ क्रतुवाले होकर तुम जन-जन को अपने उस ऋतु से लाभान्वित कर रहे हो।

हे जगदीश्वर ! तुम अपने काव्य से कवि बने हुए हो। काव्य यह कहलाता है जिसे सुनकर मनुष्य का तन-मन-आत्मा झूम उठे, रस से आप्लुत हो उठे। तुम्हारा वेदकाव्य ऐसा ही चामत्कारिक है। तुम्हारे उस वेदकाव्य का एक-एक मन्त्र, एक-एक पद ऐसे अर्थ- वैविध्य को लिये हुए है, ऐसे अधिभूत, अधिदैवत, अध्यात्म आदि अर्थों को मानस-पटल पर उतारनेवाला है कि वैसा काव्य संसार में दुर्लभ है। हे सकल जगत् के स्रष्टा ! तुम 'विश्ववित्' हो, सर्वज्ञ हो, तुमसे किसी के मन की बात छिपी नहीं रहती, तुमसे संसार के किसी भी कोने में घटित होनेवाली घटना अविदित नहीं रहती, किसी के द्वारा किये गये कोई भी कर्म अज्ञात नहीं रहते। सर्वज्ञ होकर ही तुम सकल आध्यात्मिक एवं भौतिक जगत् का नियन्त्रण और संचालन कर रहे हो।

हे द्यावा-पृथिवी के अधिष्ठाता ! द्यु-लोक और पृथिवी-लोक में जो 'वसु' विद्यमान हैं, अद्भुत सम्पत्तियाँ निहित हैं, उन सबके निवासक भी तुम्हीं हो। स्वर्ण-रजत आदि की खानें, रत्नाकरों के विविध रत्न, अन्य अनेक-विध खनिज पदार्थ सब तुम्हारी ही महिमा से स्थित होते हुए हमारे उपकारक बने हुए हैं। हे राजाधिराज ! तुम्हारे विषय में एक अद्भुत बात यह भी है कि तुम 'एक' ही हो, बिन किसी सहायक के अकेले सारे विश्व का सर्जन, नियमन, पालन श्रादि करते हो। हे प्रभु! तुम्हारी महिमा अपरम्पार है।

साभार-वेदमंजरी

अंतरंग सभा एवं बृहद्धिवेशन की सूचना

सभी पदाधिकारियों, प्रतिष्ठित, अन्तरंग, सहयुक्त सदस्यों, समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारियों/प्रतिनिधियों एवं जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधियों/पदाधिकारियों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. की अंतरंग सभा की बैठक एवं वार्षिक साधारण सभा का अधिवेशन दिनांक ३० एवं ३१ मार्च, २०२४, दिन-शनिवार एवं रविवार, तद्नानुसार- चैत्र कृष्ण पक्ष पंचमी एवं षष्ठी संवत् २०८० प्रातः ११:०० बजे आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. लखनऊ के प्रधान-श्री देवेन्द्रपाल वर्मा जी की अध्यक्षता में नया सभागार, आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र., ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ में सम्पन्न होगा।

एजेण्डा एवं विस्तृत कार्यक्रमों की रूपरेखा सभी को डाक द्वारा भेजी जा चुकी है। कृपया समय से उपस्थित होकर अधिवेशन को सफल बनायें।

–पंकज जायसवाल
मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र., लखनऊ।

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

पंकज जायसवाल
मंत्री/सम्पादक

आर्य शिवशंकर वैश्य
प्रबन्ध सम्पादक

सम्पादकीय.....

''ईश्वर का वैदिक स्वरूप''

''अपने जीवन को सुंदर और सुखमय कौन नहीं बनाना चाहता? सभी चाहते हैं। परंतु उस की विधि ठीक प्रकार से नहीं जानते।''

वेदों के आधार पर ऋषियों ने इस विधि को अपने शास्त्रों में विस्तार से समझाया है। उनका संदेश इस प्रकार से है, कि ''यदि आप अपने जीवन को सुंदर एवं सुखमय बनाना चाहते हैं, तो आपको ईश्वर के वेदोक्त सच्चे स्वरूप की उपासना करनी चाहिए। संसार में सबसे अधिक लाभकारी कार्य ईश्वर के वेदोक्त सच्चे स्वरूप की उपासना करना है।''

आप सोचेंगे, ''क्या ईश्वर का स्वरूप भी सच्चा और झूठा दो प्रकार का होता है।'' जी हां। जैसे ''बाजार में घी तेल आदि वस्तुएं मिलती हैं । वे असली अर्थात शुद्ध भी मिलती हैं, और मिलावटी अशुद्ध भी।'' ''इसी प्रकार से आजकल संसार में दो प्रकार का ईश्वर का स्वरूप बताया जाता है।'' ''एक - ईश्वर का वास्तविक स्वरूप, जिसका उल्लेख वेदो में हैं, और ऋषियों के शास्त्रों में है। और दूसरा - ईश्वर का मिलावटी स्वरूप, जिसका उल्लेख अवैदिक शास्त्रों में है। वह उल्लेख मिलावटी अर्थात पूरा शुद्ध नहीं है, उसमें कुछ सच्चाई है, और कुछ झूठ भी मिला रखा है।''

''जैसे शुद्ध भोजन खाने पर आपको जितना लाभ होता है, और जितनी शक्ति मिलती है, मिलावटी भोजन खाने पर आपको उतना लाभ नहीं होता, और उतनी शक्ति भी नहीं मिलती।'' इसी प्रकार से ''ईश्वर के शुद्ध असली सच्चे स्वरूप की उपासना करने से जो लाभ होता है, और जितनी शक्ति मिलती है, उतना लाभ और शक्ति ईश्वर के मिलावटी स्वरूप की उपासना करने से नहीं मिलती।'' ''यदि लोग ईश्वर के वेदोक्त सच्चे स्वरूप की उपासना करते होते, तो आज हमारा देश भारत, संसार में सबसे आगे होता, विश्वगुरु होता, जैसा कि भूतकाल में था। आज भी यदि लोग ईश्वर के वेदोक्त सच्चे स्वरूप की उपासना करें, और वेदों के अनुसार शुभ कर्मों का आचरण करें, तो भारत फिर से विश्वगुरु आज भी बन सकता है।''

इसलिए ऋषियों ने यह समझाया, ''जैसे वृक्ष की जड़ों में पानी डालने से उसका लाभ पूरे वृक्ष को ऊपर वृक्ष की चोटी तक मिलता है। इसी प्रकार से ईश्वर के वेदोक्त सच्चे स्वरूप की उपासना करने से, आत्मा मन बुद्धि इंद्रियां शरीर आदि सबको बहुत शक्ति मिलती है, और व्यक्ति का पूरा जीवन सुंदर एवं सुखमय बन जाता है।''

''इसलिए वेदों और ऋषियों के शास्त्रों का अध्ययन करें। ईश्वर के वेदोक्त सच्चे स्वरूप की उपासना करें। शुभ कर्मों का आचरण करें। जिससे कि आपका जीवन सुंदर एवं सुखमय बन जाए।''

''वेदादि शास्त्रों के अनुसार ईश्वर एक ही है। वह सर्वव्यापक है। निराकार है। चेतन स्वरूप है, अर्थात ज्ञान गुण वाला है। ईश्वर में अनंत ज्ञान है। वह सबके अंदर बाहर विद्यमान है। सदा सबको देखता है। वह सबके मन की बात जानता है।''

''जब कोई व्यक्ति मन में अच्छी योजना बनाता है, तो ईश्वर व्यापक और चेतन होने के कारण उसके मन की योजना को तत्काल जान लेता है।'' ''उस अच्छी योजना के समय ईश्वर उसे अंदर से आनंद उत्साह एवं निर्भयता के भाव उत्पन्न करता है।'' यह ईश्वर की ओर से संकेत है, कि ''वह आपकी अच्छी योजना का समर्थन कर रहा है। इसलिए जब ऐसी अनुभूति हो, तो उस अच्छी योजना का आचरण व्यवहार में कर लेना चाहिए। इससे आपको सुख शांति समृद्धि आदि फल प्राप्त होगा।''

''और जब व्यक्ति मन में गलत योजना बनाता है, तब भी ईश्वर उसकी योजना को तत्काल जानकर उसको मन में भय शंका और लज्जा की अनुभूति उत्पन्न करता है।'' यह ईश्वर की ओर से सूचना है कि ''आपकी यह योजना ठीक नहीं है। ईश्वर इसका समर्थन नहीं करता।'' ''ऐसे गलत कार्य करने पर तो उसे ईश्वर अनेक प्रकार से दंडित करेगा, इस जन्म में भी और अगले जन्मों में भी।''

अतः जब आनंद उत्साह एवं निर्भयता आदि की अनुभूति हो, तो ''बुद्धिमान व्यक्ति को ईश्वर की सूचना पर ध्यान देना चाहिए। और उन अच्छे कार्यों को कर लेना चाहिए।'' ''ऐसा करने पर व्यक्ति सुख पूर्वक जी सकेगा, और अपने जीवन को सफल बना सकेगा।''

-स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक
की कलम से।

गतांक से आगे.....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ चतुर्दशसमुल्लासारम्भः

अथ यवनमतविषयं व्याख्यास्यामः

१८- इस तरह खुदा मुर्दो को जिलाता है और तुम को अपनी निशानियाँ दिखलाता है कि तुम समझो मं० ११ सि० ११ सू० २। आ० ७३।। (समीक्षक) क्या मुर्दा को खुदा जिलाता था तो अब क्यों नहीं जिलाता ? क्या कयामत की रात तक कबरों में पड़े रहेंगे? आजकल दौड़ासुपुर्द हैं? क्या इतनी ही ईश्वर की निशानियां हैं? पृथिवी, सूर्य, चन्द्रादि निशानियां नहीं हैं? क्या संसार में जो विविध रचना विशेष प्रत्यक्ष दीखती हैं ये निशानियां कम हैं?।।१८।।

१९वें सदैव काल बहिश्त अर्थात् वैकुण्ठ में वास करने वाले हैं।

मं० ११ सि० ११ सू० २। आ० ८२।।

(समीक्षक) कोई भी जीव अनन्त पाप पुण्य करने का सामर्थ्य नहीं रखता इसलिये सदैव स्वर्ग नरक में नहीं रह सकते। और जो खुदा ऐसा करे तो वह अन्यायकारी और अविद्वान् हो जावे। कयामत की रात न्याय होगा तो मनुष्यों के पाप पुण्य बराबर होना उचित है। जो अनन्त नहीं है उस का फल अनन्त कैसे हो सकता है? और सृष्टि हुए सात आठ हजार वर्षो से इधर ही बतलाते हैं। क्या इस के पूर्व खुदा निकम्मा बैठा था ? और कयामत के पीछे भी निकम्मा रहेगा ? ये बाते सब लड़कों के समान हैं क्योंकि परमेश्वर के काम सदैव वर्तमान रहते हैं और जितने जिस के पाप पुण्य हैं उतना ही उसको फल देता है इसलिये कुरान की यह बात सच्ची नहीं।। १९।।

२०-जब हम ने तुम से प्रतिज्ञा कराई न बहाना लोहू अपने आपस के और किसी अपने आपस को घरों से न निकालना, फिर प्रतिज्ञा की तुम ने इस के तुम ही साक्षी हो । फिर तुम वे लोग हो कि अपने आपस को मार डालते हो. एक फिरके को आप में से घरों उन के से निकाल देते हो।

-म० ११ सि० ११ सू० २१ आ० ८४१८५।।

(समीक्षक) भला। प्रतिज्ञा करानी और करनी अल्पज्ञों की बात है वा परमात्मा की जब परमेश्वर सर्वज्ञ है तो ऐसी कड़ाकूट संसारी मनुष्य के समान क्यों करेगा ? भला यह कौन सी भली बात है कि आपस का लोहू न बहाना, अपने मत वालों को घर से न निकालना, अर्थात् दूसरे मत वालों का लोहू बहाना, और घर से निकाल देना ? यह मिथ्या मूर्खता और पक्षपात की बात है। क्या परमेश्वर प्रथम ही से नहीं जानता था कि ये प्रतिज्ञा से विरुद्ध करेंगे? इस से विवित होता है कि मुसलमानों का खुदा भी ईसाइयों की बहुत सी उपमा रखता है और यह कुरान स्वतन्त्र नहीं बन सकता क्योंकि इसमें से थोड़ी सी बातों को छोड़कर बाकी सब बातें बायबिल की हैं।।२०।।

क्रमशः अगले अंक में...

दयानन्द शास्त्रार्थ प्रश्नोत्तर-संग्रह

अनेक विषय

(मुन्शी इन्द्रमणि जी के शिष्य ला० जगन्नाथदास की बनाई आर्य-प्रश्नोत्तरी को समालोचना-अप्रैल, १८८२)

१. जब मुन्शी इन्द्रमणि ने सहायता में आए हुये धन का पूर्व प्रतिज्ञा के अनुसार पूर्ण ब्यौरा न बताया और न छापा, तब श्री स्वामी जी ने उन सबसे सम्बन्ध विच्छेद कर लिया। तब मुन्शी जी ने आर्य प्रश्नोत्तरी (संवत् १९३८ आर्य दर्पण प्रेस शाहजहाँपुर में छापी। उसका उत्तर लिखवा कर श्री स्वामी जी ने भारत सुदशा प्रवर्तक में छपने के लिए भेजा।

(पृष्ठ ३ । प्रश्नोत्तर १६) जीव वास्तविक अनन्त है। इस कारण ईश्वर के ज्ञात में भी अनन्त ही है।

(समीक्षा) जब जीव देश काल वस्तु अपरिछिन्न अर्थात् भिन्न-भिन्न हैं । उनको अनन्त कहना मानो एक अज्ञानी का दृष्टान्त बनना है। अनन्त तो क्या, परन्तु परमेश्वर के ज्ञान में असंख्य भी नहीं हो सकते। परमेश्वर के समीप तो सव जीव वस्तुतः अतीव अल्प हैं। जीवों की तो क्या परन्तु प्रति जीव के अनेक कर्मों के भी अन्त और संख्या को परमेश्वर यथावत् जानता है। जो ऐसा न होता तो वह परब्रह्म जीव और उनके कर्मों का जैसा-जैसा जिस-जिस जीव ने कर्म किया है उन उन का फल न दे सके। जव कोई इनसे प्रश्न करे कि एक-एक जीव अनन्त हैं वा सब मिल के ? जो एक-एक अनन्त हैं तो ''य आत्मनि तिष्ठन् '' इत्यादि ब्राह्मण वचन अर्थात् जो परमात्मा व्याप्य जीवों में व्यापक हो रहा है और ऐसा ही लाला जगन्नाथदास ने ''पृष्ठ ५ प्रश्तोत्तर ३२'' के उत्तर में लिखा है कि ''जीवेश्वर का व्याप्य व्यापक सम्बन्ध और ''पृष्ठ ४, प्र० २१ में जीव को अणु माना है। जीव शरीर को छोड़ दूसरे शरीर में जाता और शरीर के मध्य में रहता है। इसलिए अनन्त वा असंख्य ईश्वर के ज्ञान में नहीं। किन्तु जीवों के ज्ञान में जीव असंख्य हैं। जिन लाला जगन्नाथदास वा मुन्शी इन्द्रमणि जी को अपने ग्रन्थस्थ पूर्वापर विरुद्ध विषयों का ज्ञान भी नहीं है तो आगे क्या आशा होती है। इसी से इनके सब प्रपंचों का उत्तर समझ लेना शिष्टों को योग्य है।

(पृष्ठ ४, प्र० २४) ''जीव के गुण वास्तव में विभु हैं, परन्तु वृद्धाअवस्था में अविद्या से आच्छादित होने से परिछिन्न हैं। मुक्तावस्था में विभु हो जाते हैं।''

(समीक्षा) विभु गुण उसी के होते हैं जो द्रब्य भी विभु हो। और जिसको अणु मानते हैं क्या उसके गुण विभु हो सकते हैं? क्योंकि गुणों का आधार द्रव्य होता है। भला कोई कह सकता है कि परिछिन्न द्रव्य में विभु गुण हों। क्या गुणी देशी और गुण विभु हो सकते हैं? और गुणी को छोड़ केवल गुण पृथक् भी रह सकता है ? नहीं! नहीं !! और जो (पृष्ठ ४१ प्रश्नोत्तर २१ में) जीव को अणु माना है। वह भी ठीक नहीं। क्योंकि एक अणु में भी जीव रह सकता है। अर्थात् एक अणु में अनेक जीव रह सकते हैं। देखो अणु अणु काँच वा पृथ्वी आदि के मध्य में से पार नहीं जा सकता और जीव जा सकता है। इसलिए जीव अणु से भी सूक्ष्म है और इसके अणु भी विभु नहीं। हाँ मुक्तावस्था में जिस ओर उसका ज्ञान होगा उस दूरस्थ पदाथ को भी अपने ज्ञान स जान लेता है। नहीं तो ''युगपज्ज्ञानानुत्पत्तिर्मनसो लिंगम्'' इस न्याय शास्त्र के सूत्र का अर्थ ही नहीं घट सकेगा। जो एक क्षण में एक पदार्थ को जाने अनेक को नहीं, उसी को मन कहते हैं। वही मन मुक्तावस्था में भी रह जाता। पुनः उसी मनरूप साधन से विभु गुण वाला जीव कैसे हो सकता है।

क्रमशः अगले अंक में...

परमात्मा ने संसार जीवात्माओं के कर्म-फल भोग एवं मोक्ष प्राप्ति के लिए बनाया है

-मनमोहन कुमार आर्य

हमारा यह संसार स्वतः नहीं बना और न ही यह पौरुषेय रचना है। इस संसार को मनुष्य अकेले व अनेक मिलकर भी नहीं बना सकते। हमारा यह सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, सौर मण्डल तथा ब्रह्माण्ड अपौरुषेय और ईश्वर से रचित हैं। प्रश्न किया जा सकता है कि परमात्मा ने यह संसार क्यों बनाया है? परमात्मा सच्चिदानन्दस्वरूप सत्ता होने से ज्ञान एवं कर्म करने वाली सर्वज्ञ एवं सर्वशक्तिमान सत्ता है। परमात्मा अनादि, नित्य, अविनाशी तथा अनन्त है। ईश्वर के अनादि होने से उसने इस सृष्टि को पहली बार नहीं रचा अपितु उसने ऐसी ही सृष्टि को इससे पूर्व भी अनन्त बार रचा है। वह सृष्टि के उपादान कारण प्रकृति से बनाता है। सृष्टि का उपादान कारण प्रकृति भी अनादि व नित्य होने सहित अविनाशी व अभाव को प्राप्त न होने वाली है। सच्चिदानन्दस्वरूप ईश्वर, त्रिगुणात्मक सत्व, रज व तम गुणों वाली जड़ प्रकृति के अतिरिक्त संसार में चेतन जीवों का भी अस्तित्व है। जीव सत्य व चित्त, अल्पज्ञ परिमाण, एकदेशी, समीम, जन्म-मरण धर्मा, कर्मफल के बन्धनों में बंधा हुआ है। यह तीनों सत्तायें वा पदार्थ अनादि, नित्य एवं अविनाशी हैं। परमात्मा अपनी प्रजा जीवों के लिये ही इस सृष्टि को बनाता व चलाता है। वह एक पल के लिये भी निद्रा को प्राप्त नहीं होता और न ही थकान दूर करने के लिये विश्राम करता है। शास्त्रों के अनुसार उसका एक दिन ४.३२ अरब वर्षों का होता है। इस अवधि में वह सृष्टि को बनाता है और इसको चलाता है।

सृष्टि बनने के बाद जीवात्माओं को उनके पूर्व कल्प व जन्मों के अनुसार उपयुक्त व योग्य जन्म मिलता रहता है। यदि हमारे पाप व पुण्य बराबर होते हैं तो हमें मनुष्य का जन्म मिलता है। यदि हमारे पाप कर्म पुण्य से किंचित भी अधिक होते हैं तब हमें मनुष्य का जन्म न मिलकर पशु, पक्षी आदि नीच प्राणी योनियों में जन्म प्राप्त होता है। जन्म व मृत्यु की व्यवस्था हमारे कर्मानुसार परमात्मा करता है। हमारा अच्छा स्वास्थ्य व रोग भी हमारे ज्ञान पूर्वक कर्म व भोजन आदि पर निर्भर करते हैं। ईश्वर ने इस सृष्टि को सभी अनन्त जीवों के कल्याण वा सुख भोग के लिये बनाया है। हमारे शुभ व पुण्य कर्मों का फल सुख होता है और हमारे पाप व अशुभ कर्मों का फल दुःख होता है। हमारे देश व विश्व में बहुत से मत ऐसे हैं जो ईश्वर के सत्यस्वरूप व उसके कर्म फल के विधान को नहीं जानते। इस अज्ञान के कारण वह ईश्वर की इच्छा व भावना के विरुद्ध अनैतिक, अशुभ व पाप कर्म करते हैं। वह मूक व हमारे लिये उपयोगी गाय, बकरी, भेड़, गधा, घोड़ा, मछली, मुर्गी-मुर्गा आदि प्राणियों को अनावश्यक व अनुचित रूप से शारीरक कष्ट देते हैं। यहां तक की अपनी जीभ के स्वाद व पेट भरने के लिये पशुओं का वध तक कर डालते हैं। यह परमात्मा को न जानने और उसे भली प्रकार से न समझने के कारण से होता है। परमात्मा ने इन पशु व पक्षियों को मनुष्यों के ही समान अपने पूर्वजन्म के कर्मों का भोग करने के लिये जन्म दिया है। हमें इन जीवात्माओं से युक्त सभी पशुओं को उनके जीवनयापन में सहयोग करना चाहिये। वैदिक धर्मी इस व्यवस्था को जानते हैं और परमात्मा की वेदनिहित आज्ञा के अनुसार कर्तव्यों का पालन करते हैं परन्तु बहुत से लोग जो नाना मतों को मानते हैं वह ईश्वर की इच्छा व भावनाओं के विपरीत इनकी हत्या व इनके मांस का भक्षण करते हैं। ऐसा करने से उनका स्वभाव हिंसा से युक्त होकर वह समाज में घृणा व क्रोध के वशीभूत होकर धर्म व कर्तव्य का पालन तथा सत्य धर्म वेद का आचरण करने वालों को भी पीड़ा व दुःख देते हैं। ऐसा अनुचित काम कोई भी मनुष्य करता है तो वह मनुष्य नहीं अपितु मनुष्य के विपरीत दुष्टाचारी ही कहा जा सकता है। मनुष्यों को मनुष्यता का ही व्यवहार करना चाहिये। इसी से उसकी समाज में शोभा होती है। दुष्ट प्रकृति के मनुष्यों को सुधारना आसान काम नहीं है। कुछ थोड़े से लोग अपने विचारों में परिवर्तन करते रहते हैं परन्तु एक बहुत बड़ी जनसंख्या सात्विक विचारों से दूर होने के कारण रज व तमों गुणों से प्रभावित व्यवहारों को करती है और अपने जीवन को नरक के समान व्यतीत कर मृत्यु होने पर अधम कोटि की प्राणी योनियों में जन्म लेकर अनेक जन्मों तक दुःखों को भोगते हुए ईश्वर की करुणा व दया के कारण पुनः मनुष्य योनि में जन्म प्राप्त करती हैं।

संसार में अनन्त संख्या में जीवात्मायें हैं। यह सभी जीवात्मायें स्वरूप व गुणों में समान हैं। सभी जन्म व मरणधर्मा हैं जिसका आधार इनके पूर्वजन्म के कर्म हुआ करते हैं। परमात्मा सभी जीवों का माता-पिता, आचार्य, राजा और न्यायधीश है। इसी कारण परमात्मा अपनी जीवरूप प्रजा के लिये इस सृष्टि को बनाकर उनको पूर्वजन्मों के अनुसार उनकी जाति, आयु और सुख व दुःख रूपी भोग निर्धारित कर विभिन्न प्राणी योनियों में जन्म देता रहता है। परमात्मा ऐसा जीवों के प्रति अपनी दया एवं करूणा के स्वभाव के कारण करता है। हमें भी परमात्मा के इस गुण को ग्रहण कर अपने परिवार व समाज के सभी लोगों के प्रति ऐसा ही सेवाभाव, आचरण व व्यवहार रखते हुए सहयोग एवं उनकी पीड़ाओं को दूर करने का कार्य करना चाहिये। ऐसे सत्कर्मों को करने से ही पुण्य अर्जित करते हैं जिनका परिणाम जन्म-जन्मान्तर में आत्मा की उन्नति के साथ मनुष्य व देव योनि में जन्म की प्राप्ति होती है। मनुष्य जन्म की प्राप्ति से मनुष्य के मोक्ष और जन्म-मरण से मुक्ति का मार्ग खुलता है। यदि मनुष्य वेदों की शरण में आकर सभी प्रलोभनों पर विजय प्राप्त कर ले और योग्य विद्वानों व आचार्यों से विद्या प्राप्त कर योगाभ्यास करे तो वह मोक्ष मार्ग का पथिक बन जाता है जिससे इसी जन्म व कुछ जन्मों बाद उसकी मुक्ति व मोक्ष की आशा की जा सकती है। हमारे सभी ऋषि-मुनि तथा योगी इसी मार्ग का अनुशरण करते थे। आधुनिक युग में १३७ वर्ष पूर्व ऋषि दयानन्द ने भी इसी मार्ग का अनुशरण किया था। उन्होंने मानव जाति के उपकार के इतने कार्य किये हैं जितने पांच हजार वर्ष पूर्व हुए महाभारत युद्ध के पश्चात किसी ऋषि व विद्वान ने संसार में नहीं किये। हमारा सौभाग्य है कि हम भारत में पैदा हुए और हमें यहां आर्यसमाज से जुड़ने का अवसर मिला है जिससे हम मनुष्य जाति के सभी कर्तव्यों को जानने सहित इस संसार में अनादि तीन पदार्थों को जान सके हैं। इसके साथ ही हम ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना उपासना सहित परोपकार व दान आदि कर्मों का महत्व भी जान सकें हैं। ईश्वर की उपासना की सत्य विधि जिससे ईश्वर का साक्षात्कार और मोक्ष की प्राप्ति होती है, वह भी महर्षि दयानन्द ने हमें बताई है।

हमारा यह संसार अपौरुषेय रचना है। मनुष्य वा पुरुष भी रचना करते हैं परन्तु मनुष्य जो रचना करता है वह अल्पसामर्थ्य युक्त रचनायें होती हैं। उन रचनाओं में सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, ग्रह-उपग्रह तथा लोक-लोकान्तरों की रचना सम्भव नहीं है। यह रचना परमैश्वर्यवान परमात्मा जो सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान एवं सृष्टि का कर्ता है, उसी से होनी सम्भव है। संसार को बने हुए १.९६ अरब वर्ष हो चुके हैं। महाभारत युद्ध के समय तक सभी इस बात से सहमत थे कि ईश्वर ही सृष्टिकर्ता है और उसने अपनी शाश्वत प्रजा जीवों के कल्याण के लिये इस सृष्टि को रचा है। महाभारत युद्ध के बाद भी यही विचारधारा वैदिक मत व अन्य मतों में कुछ भेदों के साथ चलती रही। ऐसे भी मत हैं जो इस सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति व प्रलय को नहीं मानते। विज्ञान इस मान्यता का खण्डन करता है और विज्ञान की यह बात विद्वानों द्वारा स्वीकार्य भी है। विज्ञान की एक न्यूनता यह है कि वह अभी तक ईश्वर नाम की सत्ता का अनुसंधान नहीं कर पाया। यूरोप के किसी वैज्ञानिक ने वेदों का यथार्थस्वरूप व उसमें निहित ज्ञान को जाना व समझा नहीं है। यदि वह वेद और वैदिक साहित्य का अध्ययन करें और योगाभ्यास द्वारा ईश्वर की उपासना करें तो वह सत्य रहस्यों को जान सकते हैं। विद्वान जो भी खोज करते हैं उसके लिये उन्हें अध्ययन, ध्यान व चिन्तन सहित प्रयोग करने होते हैं। वैज्ञानिकों का अध्ययन केवल भौतिक पदार्थों तक ही सीमित होता है। आत्मा और परमात्मा के अध्ययन की वह उपेक्षा करते हैं। जब वह अलौकिक विषयों, पदार्थों सहित आध्यात्म विज्ञान का अध्ययन करेंगे ही नहीं तो उन्हें उनके विषय में ज्ञान व जानकारी कैसे प्राप्त हो सकती है अर्थात् प्राप्त नहीं हो सकती। हमारे सभी ऋषि व योगी भी वैज्ञानिक ही हुआ करते थे। वह आध्यात्मिक ज्ञान के वैज्ञानिक थे और हमारे वर्तमान वैज्ञानिक केवल भौतिक पदार्थों व उससे सम्बन्धित विज्ञान के ही वैज्ञानिक हैं। इनका समन्वय वेद और वैदिक साहित्य में मिलता है। यह सत्य सिद्धान्त है कि ईश्वर ने जीवात्माओं को जन्म देकर उन्हें मनुष्य व पशु-पक्षियों आदि योनियों के दर्शन करायें हैं। उसने जीवों के कल्याण व कर्मों का फल व भोग प्रदान करने सहित जीवों की आत्मा की उन्नति के लिये ही सृष्टि को बनाया है। यहां हम यह भी उल्लेख करना चाहिये हैं कि ईश्वर एक चेतन, ज्ञानवान, सर्वज्ञ, सृष्टिकर्ता व सर्वशक्तिमान सत्ता है। हम सच्चे हृदय से जो प्रार्थना करते हैं उसे सर्वव्यापक तथा सर्वान्तर्यामी ईश्वर सबका साक्षी होने से पूरा व सफल करता है। अतः हमें उसकी उपासना ऋषि दयानन्द व योगदर्शन प्रदर्शित वैदिक विधि से ही करनी चाहिये। ऐसा करने से ही हमारा जीवन सफल होगा।

वैदिक मान्यता में ईश्वर एक ही है।

-रिपुदमन आर्य

प्रश्नः- क्या वेदों में ऐसी कोई मंत्र है जहां लिखा है कि ईश्वर एक ही है?

उत्तरः- ।। इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान् ।।

।। एकं सद् विप्रा बहुधा वदंत्यग्नि यमं मातरिश्वानमाहुः।। -ऋग्वेद (१-१६४-४६)

भावार्थ :जिसे लोग इन्द्र, मित्र, वरुण आदि कहते हैं, वह सत्ता केवल एक ही है ऋषि लोग उसे भिन्न-भिन्न नामों से पुकारते हैं।

ॐ।। यो भूतं च भव्य च सर्व यश्चाधितिष्ठति।।

स्वर्यस्य च केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।। -(अथर्ववेद १०-८-१)

भावार्थ :जो भूत, भविष्य और सब में व्यापक है, जो दिव्यलोक का भी अधिष्ठाता है, उस ब्रह्म (परमेश्वर) को प्रणाम है।

सुपर्णं विप्राः कवयो वचोभिरेकं सन्तं बहुधा कल्पयन्ति । छन्दांसि च दधतो अध्वरेषु ग्रहान्त्सोमस्य मिमते द्वादश ।।-ऋग्वेद (१०-११४-५)

भावार्थः अपना विशेषरूप से पूरण करनेवाले क्रान्तदर्शी ज्ञानी लोग उस उत्तम पालनात्मक व पूरणात्मक कर्मोंवाले प्रभु को एक होते हुए को भी वेदवाणियों से अनेक प्रकार से कल्पितम करते है। सृष्टि के उत्पादक के रूप में वे उसे 'ब्रह्मा' कहते हैं, तो धारण करनेवाले को 'विष्णु' तथा प्रलयकर्ता के रूप में वे उसे 'रूद्र व शिव' कहते हैं। और प्रभु स्मरण के साथ हिंसारहित यज्ञात्मक कर्मों में वेद-मन्त्रों को धारण करते हुए ये लोग मन्त्रोच्चारण पूर्वक यज्ञों को करते हुए, इन मन्त्रों को अपना पाप से बचानेवाला बनाते हुए दस इन्द्रियों, मन व बुद्धि' इन

क्रमशः.....८ पर

सत्य नारायण व्रत कथा रहस्य

डॉ० डी० के० गर्ग

प्रचलित सत्य नारायण व्रत कथा : एक समय देवर्षि नारद मुनि मृत्युमण्डल से भ्रमण करते हुए भगवान नारायण के समक्ष जा पहुंचे और बोले कि मृत्युलोक के मनुष्य नर-नारी बहुत दुखी हैं, वे महाव्याधि सागर में डूब रहे हैं, उनके कल्याण के लिये कोई योजना बतलाइये, भगवान नारायण ने कहा कि जाओ प्रजा को आदेश दो कि पूर्णिमा का व्रत धारण करें, उससे वास्तव में मानव समाज का कल्याण होगा।

प्रायः पूर्णमासी को इस कथा का परिवार में वाचन किया जाता है। सत्य-नारायण व्रत कथा में पाँच अध्याय हैं जिसमें सूत जी शौनक आदि ऋषियों को कथा का श्रवण कराते हैं। पहले अध्याय में यह बताया गया हैं कि जो भी भक्त सत्यनारायण का व्रत करेगा, पूजन करेगा और उनकी कथा करवाएगा उसके सारे मनोरथ पूरे होंगे। दूसरे से पाँचवें अध्याय तक सूतजी पाँच पात्रों शतानंद ब्राह्मण काष्ठ विक्रेता भील राजा, उल्कामुख, साधु नाम के बनिये और राजा तुंगध्वज की कहानी बताते हैं। इस कथा के सबसे लोकप्रिय पात्र साधु बनिया की पत्नी लीलावती और पुत्री कलावती हैं।

कथा में सुनाई जाने वाली कुछ बानगियाँ :

• सत्यनारायण भगवान व्रत कथा में भगवान विष्णु के सत्य स्वरूप के बारे में बताया गया है। इस व्रत का पाठ करने से घर में सुख समृद्धि का वास होता है और भगवान विष्णु की ंपा बना रहती है।भगवान सत्यनारायण का व्रत संपन्न करने के बाद वह निर्धन ब्राह्मण सभी दुखों से छूट गया और अनेक प्रकार की संपत्तियों से युक्त हो गया। उसी समय से यह ब्राह्मण हर माह इस व्रत को करने लगा। इस तरह से सत्यनारायण भगवान के व्रत को जो मनुष्य करेगावह सभी प्रकार के पापों से छूटकर मोक्ष को प्राप्त होगा। जो मनुष्य इस व्रत को करेगा वह भी सभी दुखों से मुक्त हो जाएगा।

• विप्र से सत्यनारायण व्रत के बारे में जानकर लकड़हारा बहुत प्रसन्न हुआ। चरणामृत लेकर व प्रसाद खाने के बाद वह अपने घर गया। लकड़हारे ने अपने मन में संकल्प किया कि आज लकड़ी बेचने से जो धन मिलेगा उसी से श्रीसत्यनारायण भगवान का उत्तम व्रत करूँगा। मन में इस विचार को ले बूढ़ा आदमी सिर पर लकड़ियाँ रख उस नगर में बेचने गया जहाँ धनी लोग ज्यादा रहते थे। उस नगर में उसे अपनी लकड़ियों का दाम पहले से चार गुना अधिक मिलता है।

• बूढ़ा प्रसन्नता के साथ दाम लेकर केले, शक्कर, घी, दूध, दही और गेहूँ का आटा ले और सत्यनारायण भगवान के व्रत की अन्य सामग्रियाँ लेकर अपने घर गया। वहाँ उसने अपने बंधु-बाँधवों को बुलाकर विधि विधान से सत्यनारायण भगवान का पूजन और व्रत किया। इस व्रत के प्रभाव से वह बूढ़ा लकड़हारा धन पुत्र आदि से युक्त होकर संसार के समस्त सुख भोग अंत काल में बैकुंठ धाम चला गया।

विश्लेषणः- सत्य-नारायण भगवान की कथा में हमें बताया जाता हैं कि इन लोगों ने कथा सुनी और इनके साथ ऐसा हुआ तो वो कौन सी कथा थी जिसे कलावती और लीलावती ने सुनी थी ?मैंने भी ये कथा कई बार ध्यान से सुनी तो कुछ समझ नहीं आया ,आप भी ध्यान से सुनकर कोई निष्कर्ष निकाले ।सिर्फ एक कहानी सुनने से यदि कल्याण होने लगे तो पूरी दुनिया से गरीबी, अपराध खतम हो जाये और लोग कर्म छोड़कर कथा सुनकर धनी बनते जाय।

इसमें पंडित द्वारा अंधविस्वास फैलाने और भ्रमित करने से ज्यादा कुछ नहीं है। लेकिन सत्य को समझाना फिर भी जरुरी हो जाता है। क्योकि जो कथा सुनाई जा रही है इसमें असली कथा गायब है और यही जानने की हमारी इच्छा हो सकती है।

सत्य-नारायण व्रत कथा- सत्यनारायण व्रत कथा के दो भाग हैं, व्रत-पूजा एवं कथा और यहां सत्य-नारायण शब्द अपना महत्त्व रखते है जिन पर क्रमशः विचार करना जरूरी है।

१ सत्य क्या है ? हे परमेश्वर! (त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि) आप ही अर्न्तयामिरूप से प्रत्यक्ष ब्रह्म हो (त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि) मैं आप ही को प्रत्यक्ष ब्रह्म कहूँगा, क्योंकि आप सब जगह में व्याप्त होके, सबको नित्य ही प्राप्त हैं (ऋतं वदिष्यामि) जो आपकी वेदस्थ यथार्थ आज्ञा है, उसी को मैं सबके लिए उपदेश और आचरण भी करूँगा (सत्यं वदिष्यामि) सत्य बोलूँ, सत्य मानूँ और सत्य ही करूँगा, (तन्मामवतु) सो आप मेरी रक्षा कीजिए। (तद्वक्तारमवतु) सो आप मुझ आप्त सत्यवक्ता की रक्षा कीजिए कि जिससे आपकी आज्ञा में मेरी बुद्धि स्थिर होकर, विरुद्ध कभी न हो। क्योंकि जो आपकी आज्ञा है, वही धर्म और जो उससे विरुद्ध, वही अधर्म है। इसीलिए हम सत्य स्वरूप नारायण को साक्षी मानकर सत्याचरण का व्रत लेते है।

सत्य यानि परम सत्य ईश्वर के गुणों का बखान यानि करना उनको जीवन में अपनाना ताकि हम अच्छे कर्म करें अच्छे इन्सान बनें जिसको यज्ञ संध्या करते समय ईश्वर स्तुति मंत्र, स्वस्तिवचनमंत्र, शांतिकरणम् आदि मंत्रों के नाम से जाना जाता है।

'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म' यह तैत्तिरीयोपनिषद् २।१, का वचन है।

'सन्तीति सन्तस्तेषु सत्सु साधु तत्सत्यम्। यज्जानाति चराऽचरं जगत्ताज्ज्ञानम्। न विद्यतेऽन्तोऽवधिर्मर्यादा यस्य तदनन्तम्। सर्वेभ्यो बृहत्त्वाद् ब्रह्म' जो पदार्थ हों, उनको सत् कहते हैं, उनमें साधु होने से परमेश्वर का नाम 'सत्य'है।

सत्य को समझने के बाद अब नारायण शब्द का भावार्थ समझते हैं।

नारायण : आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः। ता यदस्यायनं पूर्वं तेन नारायणः स्मृतः।।

यह मनुस्मृति अ० १।१०, का श्लोक है।

जल, प्राण और जीवों का नाम नार है। वे अयन अर्थात् निवासस्थान हैं जिसका, इसलिए सब जीवों में व्यापक परमात्मा का नाम 'नारायण' है।

नारायण वह ईश्वर जिसके ३ मुख्य कार्य हैं। सृष्टि बनाना,चलाना और प्रलय आदि द्वारा समाप्त कर देना।जिनके कारण ईश्वर को ब्रह्मा, विष्णु, महेश यानि नारायण भी कहते हैं।

३.व्रतः- व्रत का मतलब संकल्प लेना। संकल्प यानि धर्म के १० नियमों के पालन करने का व्रत, ५ प्रकार के यज्ञ करने का व्रत लेना।

व्रत का सही भावार्थ भूखे , प्यासे रहना बिलकुल भी नहीं है। व्रत का एक अन्य अर्थ संकल्प से भी है। व्रत का अर्थ यजुर्वेद में बहुत स्पष्ट रुप में बताया गया है। देखिए—

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।

इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि।। (यजु० १/५)

भावार्थ— हे ज्ञानस्वरुप प्रभो! आप व्रतों के पालक और रक्षक हैं। मैं भी व्रत का अनुष्ठान करुँगा। मुझे ऐसी शक्ति और सामर्थ्य प्रदान कीजिए कि मैं अपने व्रत का पालन कर सकूँ। मेरा व्रत यह है कि मैं असत्य-भाषण को छोड़कर सत्य को जीवन में धारण करूँगा।

इस मन्त्र के अनुसार व्रत का अर्थ हुआ किसी एक दुर्गुण, बुराई को छोड़कर किसी उत्तम गुण को जीवन में धारण करना।

इस अलोक में विभिन्न प्रकार के व्रत का वैदिक साहित्य में उल्लेख है जैसे नवरात्र व्रतः। यहाँ नवरात्र का अर्थ है कि मानवी कायारूपी अयोध्या में नौ द्वार अर्थात् नौ इन्द्रियां है -एक मुख, दो नेत्र, दो कान, नासिका के दोनों छिद्र और दो गुप्त गुप्तेंद्रिय उनका शुद्धिकरण। प्राचीन ग्रन्थों में न तो 'सन्तोषी' के व्रत का वर्णन है और न एकादशी आदि व्रतों का विधान है।

एकादशी-व्रत का वैदिक भावार्थ है की पाँच ज्ञानेन्द्रिय और पाँच कर्मेन्द्रिय तथा एक मन ये ग्यारह हैं। इन सबको अपने वश में रखना, क्रोध ना करना, उपवास करना, शरीर की इंद्रियों को स्वस्थ रखने वाले व्यायाम करना ,नासिका से ''ओ३म'' का जप करना, वाणी से मधुर बोलना, जिस्वा से शरीर को बल और शक्ति देने वाले पदार्थों का ही सेवन करना, ब्रह्मचर्य का पालन करना यह है सच्चा एकादशी-व्रत। इस व्रत के करने से आपके जीवन का कल्याण हो जाएगा।

इसी प्रकार सत्य नारायण व्रत का अर्थ है कि मनुष्य अपने हृदय में विद्यमान सत्यस्वरुप परमात्मा के गुणों को अपने जीवन में धारण करे। जीवन में सत्यवादी बने। मन, वचन और कर्म से सत्य का पालन करे।

सारांश : सत्यनारायण व्रत कथा का मूल भावार्थ है कि मनुष्य अपने हृदय में विद्यमान सत्यस्वरुप नारायण के गुणों को अपने जीवन में धारण करने के लिए स्वाध्याय करे, ज्ञान अर्जित करे और विद्वानों के साथ संगति करते हुए उन पर चर्चा यानी कथा करे, जीवन में सत्यवादी बने। मन, वचन और कर्म से सत्य का पालन करे और इस प्रकार के नियम बनायें जिससे हमारा जीवन उच्च तथा महान हो जैसे कि जब तक हम इस संसार में जीवित रहेंगे हम कदापि मिथ्या उच्चारण नहीं करेंगे,कोई गलत या अनुचित विचार भी मन में नही लायेंगे और हमारे कर्म भी नारायण को साक्षी मानते हुए सर्वदा सत्य पर आधारित होंगे। यही वास्तव में सत्यनारायण का व्रत कहलाता है।

यही कल्याण का मार्ग है और जो इस मार्ग को चुन लेता है उसकी लोक परलोक में दरिद्रता समाप्त हो जाती हैं।

परन्तु वर्तमान में प्रचलित कथा क्या वास्तविक उद्देश्य को पूरा करती है ? ये बहुत बड़ा प्रश्न है और वास्तविक सत्य नारायण कथा करनी अत्यंत जरुरी है।

ऋषि दयानन्द–युगप्रवर्तक के साथ–साथ युगपरिवर्तक भी ऋषि दयानन्द अपने युग की असाधारण विभूति थे

-महामहोपाध्याय पण्डित युधिष्ठिर मीमांसक

विक्रम की २०वीं शताब्दी के युगप्रवर्तक भारतीय महापुरुषों में ऋषि दयानन्द का स्थान बहुत ऊंचा है। भारत जैसे रूढ़िवादी पददलित और पिछड़े हुए देश को विचार-स्वातन्त्र्य और आत्मसम्मान की गौरवमयी भावना से भरकर स्वतन्त्रता के पथ पर अग्रसर करने वालों में वे अग्रणी थे। उन्होंने आसेतु-हिमाचल प्रदेश को अपने अविश्रान्त प्रचार, भाषण और लेखन द्वारा हिला दिया।

महर्षि का जन्म काठियावाड़ प्रान्त के मौरबी प्रदेशान्तर्गत टंकारा नामक ग्राम में सं० १८८१ - १८२५ ई., में हुआ था। उनके पिता कर्शनजी तिवारी एक सम्पन्न और सम्भ्रान्त व्यक्ति थे। किशोरावस्था में ही उनके हृदय में मूर्तिपूजा पर अनास्था हो गई थी। भगवान् बुद्ध की भांति वे भी युवावस्था के प्रारम्भ में ही अमरत्व और सच्चे शिव की खोज में घर से निकल पड़े। उसकी प्राप्ति के लिये संवत् १९०१-१९२० तक प्रायः बीस वर्ष हिमाच्छादित दुर्लङ्घ्य पर्वत-शिखरों, बीहड़ वन-प्रान्तों और तीर्थों में भ्रमण करते रहे। इस विशाल भ्रमण में उन्हें भारत के कोने-कोने में जाने और सधान-निर्धन, शिक्षित-अशिक्षित तथा सज्जन-दुर्जन प्रत्येक प्रकार के व्यक्तियों से मिलने और उन्हें वास्तविक रूप में देखने का अवसर मिला। इसीलिये ऋषि दयानन्द विदेशी साम्राज्य-विरोधी विचारधारा को जन्म देने में समर्थ हो सके और तत्कालीन भारतीय जनता की आशा- अभिलाषाओं का सफल प्रतिनिधित्व कर सके।

गुरु विरजानन्द द्वारा संस्कृत वाङ्मयरूपी समुद्र के मन्थन से समुपलब्ध आर्ष ज्ञान रूपी अमृत को प्राप्त कर ऋषि प्रचार के महान् कार्य क्षेत्र में उतरे। उन्होंने मौन रहने की अपेक्षा सत्य का प्रचार करना श्रेष्ठ समझा। उनका प्रचार कार्य प्रायः बीस वर्ष तक चला। इस काल के पहले दस वर्ष उन्होंने अवधूत अवस्था में बिताए। इन दिनों वे संस्कृत भाषा का ही व्यवहार करते थे। इस कारण साधारण जनता उनकी विचारधारा को पूर्णतया हृदयंगम नहीं कर पाती थी। यह अनुभव करके तथा ब्राह्मसमाज के प्रसिद्ध नेता केशवचन्द्र सेन के सत्परामर्श से ऋषि दयानन्द ने अपने प्रचार कार्य का माध्यम आर्य (हिन्दी) भाषा को बनाया।

ऋषि का कार्य :

इस महान् क्रान्तदर्शी मनीषी ने समस्त भारत में एक भाषा, एक धर्म और एक राष्ट्र की उदात्त कल्पना को चरितार्थ करने के लिये अपना शेष जीवन अर्पित कर दिया। आर्यों के विभिन्न सम्प्रदायों तथा ईसाई और मुसलमानों के धार्मिक नेताओं से वादविवाद किये। उनके प्रचण्ड खण्डन-मण्डन से समस्त सम्प्रदायों और मतों को युग के अनुरूप अपनी साम्प्रदायिक विचारधारा में परिवर्तन करने पड़े। इस से मध्यकालीन रूढ़िवादी विचारधारा को गहरा धक्का लगा।

विदेशी सभ्यता और संस्कृति के बढ़ते हुए प्रभाव से रक्षा करने के लिये उन्होंने एतद्देशवासियों में भारत के अतीत गौरव के प्रति आत्माभिमान को जागृत किया। भविष्यत् में इसी भावना ने विकसित होकर राष्ट्रवादी विचारधारा और स्वराज्यान्दोलन को आगे बढ़ाया।

ऋषि की जन्मभाषा गुजराती थी पर उन्होंने वर्षों तक केवल संस्कृत भाषा में भाषण, वार्तालाप और शास्त्रार्थ आदि किये थे, किन्तु जन साधारण को उससे विशेष लाभ होता न देख कर उन्होंने जन्मभाषा गुजराती और वर्षों से व्यवहृत देव-वाणी का मोह त्याग कर भाषण तथा लेखन का माध्यम आर्य (हिन्दी) भाषा को बनाया। उन्होंने अपने अनेक पत्रों में हिन्दी भाषा के लिये मातृभाषा और राष्ट्रभाषा शब्दों का प्रयोग उस समय किया, जब हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का ध्यान किसी को स्वप्न में भी नहीं आ सकता था। इस से ऋषि की दूरदर्शिता सूर्य की भांति विस्पष्ट है। हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का जो आन्दोलन आज चल रहा है, उसका मूल स्रोत ऋषि दयानन्द ही थे।

ऋषि ने अपना महान् क्रान्तिकारी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश हिन्दी में ही लिखा। सत्यार्थप्रकाश का प्रथम संस्करण संवत् १९३२ में प्रकाशित हुआ था। उसमें अनेक प्रक्षेप होते हुए भी वह ऋषि को राष्ट्रिय और आर्थिक विचारों को जानने की कुंजी है।... इसके अतिरिक्त हिन्दी भाषा को उनकी सबसे बड़ी देन ऋग्वेद और यजुर्वेद के भाष्य हैं। वह प्रथम अवसर था, जब सर्वसाधारण हिन्दी-भाषाभाषी वेद जैसे प्राचीन, महत्त्वपूर्ण और धार्मिक ग्रन्थ को पढ़ने और जानने के लिये प्राप्त कर सके। उन्होंने वेद को केवल जन्मना ब्राह्मणों या पण्डितों की बपौती न रहने देकर सर्वसाधारण को सुलभ करने के लिये यह पग उठाया था। वस्तुतः उनके इस कार्य का प्रमुख लक्ष्य था, जन साधारण को वेदिक-शिक्षा-दीक्षित करके उनकी कूपमण्डूकता को दूर करना। कहना न होगा कि इसमें उनको पर्याप्त सफलता मिली।

ऋषि के ग्रन्थों की भाषा खड़ी बोली है। उसमें यद्यपि जैसी व्याकरण-शुद्धता भले ही न मिले, तथापि वह ओजपूर्ण, व्यङ्ग-प्रबलता और प्रवाह से भरपूर है, पण्डिताऊपन उसमें नहीं है। भाषा में अविवेकपूर्ण कृत्रिम संस्कृतनिष्ठता की प्रवृत्ति का भी अभाव है। उसमें सरलता है, प्रसाद है और प्रवाह है, जो भाषा के सर्वोपरि गुण माने गये हैं। स्वामीजी के भाषण और लेखन से ही भारतेन्दु-युग के साहित्य मनीषियों को प्रेरणा मिली। उस समय के सभी साहित्यकों की रचनाएं प्रायः समाजसुधार और राष्ट्रियता की भावना से ओतप्रोत हैं। यदि कोई आर्य विद्वान् उस समय की प्रकाशित आर्य पत्र-पत्रिकाओं और आर्य साहित्य का अन्वेषण करके इस सम्बन्ध में प्रकाश डाले तो सहज ही में पता चल जायगा कि राष्ट्रभाषा के प्रचार में ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज का स्थान कितना महत्त्वपूर्ण है।

इस काल के समस्त वाङ्मय में मध्यकालीन रूढ़िवादी विचारधारा का नवीन प्रगतिशील सुधारवादी विचारधारा से संघर्ष परिलक्षित होता है। नवीन राष्ट्रभाषा और उसका वाङ्मय नवीन प्रगतिशील सुधारवादी विचारधारा को व्यक्त करने का साधन बना। ऋषि दयानन्द इस संघर्ष के उन्नायकों में अग्रणी थे। इसलिये हम ऋषि को युगप्रवर्तक के साथ-साथ युगपरिवर्तक भी मानते हैं।

इन सब बातों के साथ-साथ देश की शोचनीय आर्थिक परिस्थिति को दूर करने के लिये ऋषि ने गोरक्षा का महान् आन्दोलन किया। उनकी इच्छा थी कि भारत के तीन करोड़ नरनारियों के हस्ताक्षर कराकर महारानी विक्टोरिया की सेवा में एक शिष्टमण्डल भेजा जावे। इसके लिये उन्होंने लाखों व्यक्तियों के हस्ताक्षर कराये जिनमें राजा से लेकर रंक तक सभी वर्ग के व्यक्ति थे। महर्षि की असामयिक मृत्यु से यद्यपि उनका यह कार्य पूर्ण न हो सका, तथापि जनता में इसके लिये महती जागृति उत्पन्न हो गई। इसी प्रकार वे एतद्देशवासियों की निर्धनता को दूर करने के लिये भारतीय व्यक्तियों को जर्मनी आदि कला-कौशल-प्रवीण देशों में प्रौद्योगिक शिक्षा दिलाने का भी प्रयत्न कर रहे थे। उन्होंने वेदभाष्य में स्थान-स्थान पर यन्त्रों को उपयोग में लाने और उनके द्वारा सम्पत्ति बढ़ाने का उल्लेख किया है। इस प्रकार ऋषि दयानन्द ने साम्राज्यवादी शोषण-व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष के लिये राष्ट्र को चैतन्य करने का महान् प्रयत्न किया।

आगे चल कर आर्यसमाज ने गुरुकुल और कालेज आादि शिक्षा संस्थाएं खोलकर ऋषि के कार्य को कुछ आगे बढ़ाया। इनमें शिक्षित व्यक्ति ही प्रायः राष्ट्रिय आन्दोलन के वाहक बने।

इस प्रकार हम देखते हैं कि ऋषि दयानन्द अपने युग की असाधारण विभूति थे। उन्होंने इस प्राचीन महान् देश के पिछड़े हुए जनसमाज को चहुंमुखी प्रगति के पथ पर अग्रसर करने का महान् ऐतिहासिक कार्य किया ।

प्रस्तुति : भावेश मेरजा

(स्रोत-ऋषि दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थों का इतिहास पृ० ३-६)

महर्षि दयानन्द के अनुयायी क्यों बनें?

१. दयानन्द का सच्चा अनुयायी भूत-प्रेत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी आदि कल्पित पदार्थों से कभी भयभीत नहीं होता ।

२. आप फलित ज्योतिष, जन्म-पत्र, मुहूर्त, दिशा-शूल, शुभाशुभ ग्रहों के फल, झूठे वास्तु शास्त्र आदि धनापहरण के अनेक मिथ्या जाल से स्वयं को बचा लेंगें ।

३. कोई पाखण्डी साधु, पुजारी, गंगा पुत्र आपको बहका कर आपसे दान-पुण्य के बहाने अपनी जेब गरम नहीं कर सकेगा ।

४. शीतला, भैरव, काली, कराली, शनैश्चर आदि अप-देवता, जिनका वस्तुतः कोई अस्तित्व ही नहीं है, आपका कुछ भी अनिष्ट नहीं कर सकेंगे । जब वे हैं ही नहीं तो बेचारे करेंगे क्या ?

५. आप मदिरापान, धूम्रपान, विभिन्न प्रकार के मादक से बचे रह कर अपने स्वास्थ्य और धन की हानि से बच जायेंगे ।

६. बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, नारी-प्रताडना, पर्दा-प्रथा, अस्पृश्यता आदि सामाजिक बुराइयों से दूर रहकर सामाजिक सुधार के उदाहरण बन सकेंगे ।

७. जीवन का लक्ष्य सादगी को बनायेंगे और मित व्यवस्था के आदर्श को स्वीकार करने के कारण दहेज, मिलनी, विवाहों में अपव्यय आदि पर अंकुश लगाकर आदर्श उपस्थित करेंगे ।

८. दयानन्द का अनुयायी होने के कारण अपने देश की भाषा, संस्कृति, स्वधर्म तथा स्वदेश के प्रति आपके हृदय में अनन्य प्रेम रहेगा ।

९. आप पश्चिम के अन्धानुकरण से स्वयं को तथा अपनी सन्तान को बचायेंगे तथा फैशन परस्ती, फिजूलखर्ची, व्यर्थ के आडम्बर तथा तडक-भडक से दूर रहेंगे ।

१०. आप अपने बच्चों में अच्छे संस्कार डालेंगे ताकि आगे चलकर वे शिष्ट, अनुशासन प्रिय, आज्ञाकारी बनें तथा बडों का सम्मान करें ।

११. आप अपने कार्य, व्यवसाय, नौकरी आदि में समय का पालन, ईमानदारी, कर्तृतव्यपरायणता को महत्त्व देंगे ताकि लोग आपको मिसाल के तौर पर पेश करें ।

१२. वेदादि सद् ग्रन्थों के अध्ययन में आपकी रुचि बढेगी, फलतः आपका बौद्धिक क्षितिज विस्तृत होगा और विश्व-बन्धुता बढेगी ।

१३. जीवन और जगत् के प्रति आपका सोच अधिकाधिक वैज्ञानिक होता चला जायेगा । इसे ही स्वामी दयानन्द ने 'सृष्टिक्रम से अविरुद्ध होना' कहा है । आप इसी बात को सत्य मानेंगे जो युक्ति, तर्क और विवेक की कसौटी पर खरी उतरती हो । मिथ्या चमत्कारों और ऐसे चमत्कार दिखाने वाले ढोंगी बाबाओं के चक्कर में दयानन्द के अनुयायी कभी नहीं आते ।

१४. दयानन्द की शिक्षा आपको एक परिपूर्ण मानव बना देगी । आप जाति, धर्म, भाषा, संसेंति के भेदों से ऊपर उठकर मनुष्य मात्र की एकता के हामी बन जायेंगे ।

१५. निन्दा-स्तुति, हानि-लाभ, सुख-दुःख आदि द्वन्द्वों को सहन करने की क्षमता आप में अनायास आ जायेगी ।

१६. शैव, शाक्त, कापालिक, वैष्णव, ब्रह्माकुमारी आदि सम्प्रदायों के मिथ्या जाल से हटकर आप एक अद्वितीय सच्चिदानन्द परमात्मा के उपासक बन जायेंगे ।

१७. आपकी गृहस्थी में पंच महायज्ञों का प्रवर्तन होगा जिससे आप परमात्मा, सूर्यादि देवगण, माता-पिता आदि पितृगण, अतिथि एवं सामान्य जीवों की सेवा का आदर्श प्रस्तुत करेंगे ।

क्या दयानन्द के अनुयायी बनने से मिलने वाले उपर्युक्त लाभ कोई कम महत्त्व के हैं ? तो फिर देर क्यों ? आज ही दयानन्द के सैनिकों में अपना नाम लिखायें।

-अज्ञात

मजहब का डिजाइन

(ताजा संदर्भः कश्मीर और बांग्लादेश)

-विजय मनोहर तिवारी

संसार भर में घट रही हमलों, कब्जों, कत्ल और विध्वंस की घटनाओं में, जहां भी मुस्लिम एक पक्ष हैं, मूल प्रश्न इस्लाम के डिजाइन का है, जिस पर विमर्श चल रहा है। किसी प्रदेश, देश, व्यक्ति या संगठन के संदर्भ में विचार करेंगे तो समस्या बहुत सीमित, स्थानीय और तात्कालिक दिखाई देगी। संचार माध्यमों की आधुनिक तकनीक हमें हर दिन यह बता रही है कि घटनाओं की बाढ़ आई हुई है और यह एक सीमित, स्थानीय और तात्कालिक विषय न अब है, न १४ सौ सालों से है।

यह एक व्यापक परिघटना है, जिसके मूल में विचारधारा की संरचना और स्वरूप है, जो विचित्र है। संचार तकनीक किसी वरदान की तरह हमारे काम आ रही है। अब खुलकर इस विचार की हर परत पर गंभीर विमर्श हो रहे हैं-इस्लाम की अवधारणा और उसके टूल्स पर इस्लामी शास्त्र के हजारों विद्वान अध्येता स्क्रीन पर उपलब्ध हैं, जो तार्किक ढंग से सत्य का उदघाटन कर रहे हैं। एक ऐसा सत्य जिसे भारत के सेक्युलर परिवेश में जानबूझकर ढककर रखा गया और संसार की दुष्ट शक्तियों ने पीड़ित पक्ष की पुकार बनाकर प्रस्तुत करने में अपनी ऊर्जा लगाई। सौभाग्य से तकनीक पूर्ण पारदर्शी, निष्पक्ष और लोकतांत्रिक है। पत्ते-पत्ते और बूटे-बूटे की हर फड़कन सामने है। हर नट और हर बोल्ट को आप कसा हुआ देख सकते हैं।

इस्लाम के कवर में हर मुसलमान को यह गर्व से ज्ञात है कि धरती पर उनके एकमात्र आदर्श पैगंबर मोहम्मद ने काबे में लौटते ही मूर्तियों को तोड़ा था। यह संभव है कि वे किसी योग-ध्यान या तप-साधना से इस निष्कर्ष पर पहुंचे हों कि परमात्मा (जिसने उन्हें अपना नाम अल्लाह बताया या जिसे उन्होंने अल्लाह कहकर संबोधित किया) से संबंध के लिए किसी प्रतीक की आवश्यकता नहीं है। प्रतीकों के विरुद्ध यह प्रज्ञा प्राप्त होते ही वे अरब समाज के प्राचीन बुतखाने काबे में पहुंचे और अल-लात, अल-मनात और अल-उज्जा सहित अरबों के समस्त पवित्र देवी-देवताओं की प्रतिमाओं को तोड़कर बाहर फेंक दिया। इस एक वाक्य में समाहित संपूर्ण दृश्य और उस दिन वहां के स्थानीय समाज की मनःस्थिति को अपने भीतर अनुभव कीजिए।

हजरत पैगंबर चाहते तो तप-साधना से प्राप्त अपनी वैचारिक सिद्धि के अज्ञान के अंधकार में पड़े संसार में व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए मदीना में ही अलग आश्रम या कोई संस्थान खोलकर अपनी अलग यात्रा आरंभ कर सकते थे। उनकी दिव्य दृष्टि में वह मूर्तिपूजा के पाप में पड़े हुए एक जाहिल और पिछड़े समाज की ऐसी नई महान् यात्रा थी, जो परमात्मा के अंतिम आदेश से पुण्य की ओर आरंभ कराई गई थी।

जैसा कि एक समय वैदिक विचार के विरुद्ध खड़े हुए गौतम बुद्ध ने किया। सारनाथ से उन्होंने अपनी एक अलग यात्रा का पवित्र शुभारंभ किया था। वे वेदों को जलाने, वैदिक विद्वानों को स्वर्गवासी बनाने और वैदिक आश्रमों और गुरुकुलों को राख करने नहीं निकले। असीम शांति से तथागत ने अपना विचार प्रथम चार प्रबुद्धजनों को वाराणसी के निकट ही सुनाया। पैगंबर की 'रिवर्स हिजरत' का प्रसंग ऐसा नहीं है, जहां ऐसी असीम शांति, प्रेम और करुणा की वर्षा हो रही हो।

पैगंबर के राजनीतिक उत्तराधिकारी खलीफाओं के कब्जों, मोहम्मद बिन कासिम के हमलों और भारत में महमूद गजनवी की लूट से लेकर बांग्लादेश की अराजक भीड़ के हजारों कासिमों और महमूदों ने इस्लाम के रूप में एक यही कर्म शिरोधार्य किया। चर्च, मंदिर और मूर्तियां तोड़ना, उन्हें लूटकर बरबाद करना या उनके अवशेषों को अपने अनुसार आकार देना उनके लिए वैसा ही है जैसे हिंदुओं के लिए हवन, जैनियों के लिए भक्तामर का पाठ और सिखों के लिए शबद। इस्लाम के डिजाइन में यह पवित्र कर्मकांड हैं।

यह एक ऐसे इंजन की भांति है, जो जहां भी होगा, ठीक इसी प्रकार अपना कार्य संपादित करेगा। चौबीसों घंटे चलने वाली एक मेगा मशीन का इंजन, जिसके हर कलपुर्जे को ज्ञात है कि उसे क्या करना है। काफिर, कुफ्र, शिर्क और मुशरिक इसके स्पेशल फीचर्स हैं। मुजाहिदीन, जिहाद और जन्नत का अल्ट्रा एडिशन इसकी गति को प्रभावी बनाता है। अरब की रेत से निकला वैचारिक ईंधन टैंक में फुल है-क्रूड ऑइल!

इस परम डिजाइन के साफ्टवेयर में यह फीड पक्की है कि हमारी यही क्रियाएं सर्वश्रेष्ठ, अंतिम आदेश और अनिवार्य पुण्य हैं और इसे धरती के अंतिम व्यक्ति और अंतिम मंदिर-मूर्ति, चर्च या गुरुद्वारे तक जाकर अधिरोपित करना है। इसलिए वे जहां भी हैं, अपने एकसूत्रीय तकनीकी कार्य में लगे हैं।

इफ्तखारुद्दीन आईएएस बन जाए या कलीमुद्दीन मौलाना हो जाए, दोनों में कोई अंतर नहीं है। सॉफ्टवेयर एक ही है, जिसकी चिप में रंगीन स्वर्ग के सौंदर्य की थ्रीडी इमेज अत्यंत लुभावने वीडियो गेम की भांति चौबीस घंटे चमक रही हैं। यह कर्म के बदले मिलने वाला अंतिम पुण्य प्रसाद है, किंतु अनिवार्य रूप से मरणोपरांत प्राप्त होने वाला लाभ। मरणोपरांत भी तत्काल नहीं, प्रलय की प्रतीक्षा में बीतने वाला अंतहीन कालखंड एक अंतराल की भांति है, जिसे कब्र के वातानुकूलित प्रतीक्षालय में व्यतीत करना है। अंतिम निर्णय के समय स्वर्गारोहण आरंभ होगा।

हां, अपेक्षा यह है कि मृत्यु रोग-व्याधि से साधारण कोटि की नहीं होनी चाहिए, वह मशीन के मिशन के लिए होनी चाहिए। यह मशीन और इंजन उसी मिशन के लिए घरघरा रहे हैं। हमने न्यूयार्क में वह तेज घरघराहट सुनी है, जिसे नाइन-इलेवन कहा गया। हमने भारत के चप्पे-चप्पे में वह घरघराहटें कभी नहीं सुनीं, क्योंकि तब सैटेलाइट से सीधे प्रसारण नहीं थे।

नालंदा-विक्रमशिला में मोहम्मद बख्तियार का ब्रांड ठीक यही मशीन लेकर आया था। देहली में ऐबक से लेकर औरंगजेब तक इसी के अनगिनत कारगर कलपुर्जे तख्तों पर जड़े थे। विजयनगर में पांच बहमनी इंजनों ने मिलकर आसमान को धुएं से भर दिया था। गुजरात से लेकर कश्मीर और बंगाल तक छह सौ सालों तक इन्हीं के कारखाने लगे और फैले थे। बामियान में यही मशीन बुद्ध को नष्ट कर रही थी। बांग्लादेश में उसी बख्तियार की हरी-भरी खरपतवार लहलहा रही है।

अरब की यह आक्रामक वैचारिक विरासत आज विश्व के अनगिनत देशों के करोड़ों नागरिकों को आए दिन अपने अतीत का सुंदर परिचय दे रही है। इनकी चिमनियों से निकलने वाला अनवरत गाढ़ा धुआं अपने नीचे बहुत कुछ ऐसा है, जिसे राख करके ही सातवें आसमान की ओर गति कर रहा है। जलकर भस्म होती वह सभ्यताओं की संचित मूल्यवान निधि है, जिसे हमारी अनगिनत पीढ़ियों ने अपने परिश्रम और पुरुषार्थ से गढ़ा और बचाकर रखा था। किसे पता है कि जलाए गए नालंदा की लाइब्रेरियों में राख होकर धरती में समा गई लाखों पांडुलिपियों में किसने क्या लिख छोड़ा था?

इस्लाम के डिजाइन की एक खूबी यह है कि वह अतीत से आपके संबंध का स्थाई विच्छेद ही नहीं करता, उसके प्रति गहरी घृणा की पालिश भी मार देता है। स्मृतियों को पूरी तरह पौंछकर ही उपकरण को नया रूप दिया जाता है। इसलिए इस्लाम के पहले के अरब समाज और उनकी परंपराओं के बहुत अधिक ऐतिहासिक विवरण नहीं हैं। एक थोपा हुआ निष्कर्ष है कि वह मूर्तिपूजक जाहिल थे। इस्लाम एक जनकल्याणकारी मिशन की तरह प्रकट हुआ और सब ठीक कर दिया। नालंदा और विजयनगर को मिटाना, सोमनाथ या बामियान को उड़ाना, हजारों साल के अतीत की एकमुश्त समाप्ति और एक नए इतिहास की घोषणा है। इसी उज्जवल श्रृंखला में नाइन-इलेवन एक ताजा लक्ष्य है, जिसे पूरा किया गया।

अब तक के अनुभवों से यह भी सिद्ध है कि इस डिजाइन में तबलीग और मदरसे ऐसे कार्यकुशल वर्कशॉप और गैराज हैं, जहां मजहबी रिसर्च एंड डेवलपमेंट एंड रिपेयरिंग की दिशा में दक्ष आलिमों के मार्गदर्शन में नई पीढ़ी के इंजीनियर और कारीगर तैयार किए जाते हैं। स्किल डेवलपमेंट का यह इस्लामी संस्करण भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश में अरब से ज्यादा फला-फूला। सेक्युलर सरकारों ने सब्सिडी की प्रभावशाली बौछारें मारीं, उनके वेतन-भत्ते निर्धारित कर दिए। यह धड़धड़ाकर पटरियों पर आती ट्रेन के नीचे श्रद्धापूर्वक लेटने के लिए किया गया निवेश है।

किसी भी डिजाइन से यह अपेक्षा स्वभाविक है कि वह तकनीक से कोई परहेज न करे। जब तोप और तलवारें थीं तब ऊंटों और घोड़ों की सवारी करते हुए उनसे काम चलाया, अब एके-५७ और रॉकेट लांचर और विमानों तक जा पहुंचे। जब लाउड स्पीकर नहीं थे तब भी परमात्मा तक पुकार जाती ही थी और अब गली-गली की चारों दिशाओं में दिन में पांच बार अल्लाह का ऐलान हकीम लुकमान ने मनुष्य की श्रवण क्षमता की निरंतर पवित्रता के लिए परचे पर लिख छोड़ा है।

हम नहीं जानते कि लगातार घरघराती इस मेगा मशीन के किस कोने में, इंजन के किस हिस्से में, एक्सलेटर या गियर या टायर या ट्यूब के किस अंश में अगले किस महानगर, मार्ग, चौक-चौराहे के किस लक्ष्य की रूपरेखा और दिशा फीड है। कितने भारत, कितने केरल और कश्मीर, कितने पाकिस्तान, कितने बांग्लादेश अभी धूल-धूसरित होना शेष हैं। मशीन के अब तक के अद्वितीय परफार्मेंस को देखकर यह अवश्य कहा जा सकता है कि वह एक साथ अनेक लक्ष्यों पर संधारित अनंतमुखी मिसाइल है, जिसके समक्ष अनेक श्रीनगर, रंगपुर, नाइन-इलेवन, बामियान, विजयनगर, अयोध्या, मथुरा, काशी, अढ़ाई दिन के झोपड़े, भोजशालाएं, नालंदा, विक्रम-शिला और कुतुबमीनार आगे और भी हैं।

काश, इस उत्कृष्ट डिजाइन में ब्रेक जैसी कोई एक मामूली चीज भी होती!

क्रमशः.....१ पर

आपको तोप के मुंह पर बांधकर यह कहा जाये कि आप मूर्ति के सामने नतमस्तक हो जाएँ, अन्यथा आपको उड़ा दिया जायेगा तो आपका उत्तर क्या होगा? स्वामीजी ने एकदम कहा कि मैं कहूँगा ''उड़ा दो।''

महर्षि की क्षमाशीलताः-

१- जब भी स्वामीजी को शारीरिक या आर्थिक हानि पहुँचाने का प्रयास किया गया तो उन्होंने अपराधी को सदैव क्षमा कर दिया। जैसे उन्हें कई बार विष देकर प्राणघातक प्रहार किये गए। १८७० में अनूपशहर की घटना है, एक ब्राह्मण ने उन्हें पान में विष दे दिया। अपराधी पकड़ा गया पर स्वामीजी ने यह कहते हुए उसे छुड़ा दिया कि मैं संसार को बंधनमुक्त कराने आया हूँ, बंधवाने नही।

२- १८७७ में अमृतसर में अपने अध्यापक के कहने पर मिठाई के लालच में बच्चों ने स्वामीजी पर पत्थर फेंके। पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया। स्वामीजी ने अध्यापक को क्षमा कर दिया और बच्चों में मिठाई बाँट दी।

३- ठाकुर कर्ण सिंह ने उनपर तलवार से वार किया, स्वामीजी ने उसकी तलवार को पकड़कर तोड़ डाली, लोगों ने स्वामीजी पर दबाव बनाया कि वे कर्ण सिंह के विरुद्ध पुलिस में शिकायत करें पर स्वामीजी ने ऐसा करने साफ मना कर दिया।

महर्षि की वाकपटुता व हास्य प्रवृतिः-

१- स्वामीजी तुरन्तबुद्धि थे, उनमें हास्य की प्रवृति भी बहुत थी और वे अपनी इस शैली द्वारा भी समाज में सुधार का ही प्रयास करते थे। एक बार स्वामीजी अन्य व्यक्तियों के साथ फर्श पर बैठे थे, एक पण्डित आया और ऊँचे चबूतरे पर बैठ गया। स्वामीजी से वार्तालाप करते हुए भी नीचे नही उतरा तो बाकी लोगों उसके इस व्यव्हार पर आपत्ति जताई। तो स्वामीजी ने कहा "उसे वहीँ बैठने दो। यदि उच्चासन विद्वता का प्रतीक है तो पेड़ पर बैठा कौवा पण्डित से अधिक विद्वान माना जायेगा।

२- नवम्बर १८७९ में दानापुर में एक ठाकुरप्रसाद सुनार ने एक पत्नी के रहते हुए दूसरी शादी करली, और एक दिन स्वामीजी से योग सीखाने की प्रार्थना करने लगा। स्वामीजी ने कहा "तुम एक विवाह और करलो तुम्हारा योग पूरा हो जायेगा।'' ३- १८७९ में कुम्भ के मेले के अवसर पर वकार अली बेग नमक डिप्टी कलेक्टर ने स्वामीजी से पूछा कि हरिद्वार के पण्डों ने हरि की पैड़ी घाट को अन्य गंगा घाटों की अपेक्षा पवित्र घोषित कैसे कर दिया? स्वामीजी ने उत्तर दिया "जैसे अजमेर में ख्वाजा की दरगाह को खादिम ने अन्य दरगाहों से अधिक बड़ा घोषित कर दिया।'' ये दोनों पण्डों और खादिम की चाल है।

महर्षि की निष्कामता (selflessness):- स्वामीजी पूर्णता निष्काम और निस्वार्थ व्यक्ति वाले थे। निष्कामता उनके चरित्र की एक बड़ी विशेषता थी। उन्होंने हर उस बात को लात मार दी जिससे उनका महत्व बढ़े। १८७७ में लाहौर में आर्यसमाज का संविधान बनाते समय लोगों ने उनसे आर्यसमाज का 'गुरु' पद स्वीकारने का निवेदन किया तो स्वामीजी ने कहा कि वे तो संसार को गुरुडम से मुक्ति दिलाना चाहते हैं। बाद में लोगों ने 'परम सहायक' का पद देना चाहा तो स्वामीजी ने कहा कि 'परम सहायक तो केवल परमात्मा है।'

महर्षि का मानवता के प्रति आगाध प्रेमः- स्वामी दयानन्द एक दयालु हृदय के स्वामी थे। उनका हृदय उनके आस-पास रहने वाले, अभागे एवं विपत्तिग्रस्त लोगों के लिए करुणा से भरा हुआ रहता था। लोगों के कष्ट, उनकी अत्यंत गरीबी और असहायता जो अंग्रेजी राज और पाखंडियों के कारण थी के प्रति स्वामीजी में अतीव पीड़ा थी।

१- सितम्बर १८७८ में जब स्वामीजी मेरठ में थे तो एक सज्जन उनके पास आये और उनसे पूछा कि क्या स्वामीजी ठीक-ठाक हैं? स्वामीजी ने कहा कि इससे बड़ी परेशानी क्या होगी कि ये ब्राह्मण(उन ब्राह्मणों की ओर संकेत करते हुए जो वहां बैठे थे) अपने कर्तव्यों का ठीक से पालन नही करते। देशसुधार, धर्मप्रचार के लिए किंचित् भी ध्यान नहीं देते हैं। इस देश के निर्धन एवं विपत्तिग्रस्त लोगों के लिए इनके मन में तनिक भी दया के भाव नही हैं।

२- १८७९ में हरिद्वार के कुम्भ मेले के अवसर पर जब कि स्वामीजी कुछ लोगों के मध्य बैठे हुए थे, अचानक ही लेट गए और फिर थोड़ी देर में उठकर घूमने लगे। एक सज्जन ने पूछा कि क्या आपको कहीं दर्द हो रहा है? स्वामीजी ने गहरा साँस लेकर बोले "भाई, इससे हृदयविदारक दर्द क्या होगा कि यह देश विधवाओं की आहों, अनाथों की भयंकर चीखों एवं गोहत्या के कलंक के कारण बर्बाद हो रहा है।"

३- १८८२ में उदयपुर में राजकवि कविराजा शयामलदास ने सुझाव दिया कि देश को स्वामीजी का स्मृति चिन्ह बनाना चाहिए तो स्वामीजी ने कहा "ऐसा कभी मत करना। बल्कि मेरी राख किसी खेत में फेंक देना जहाँ वह कुछ लाभदायक हो सके।" न सिर्फ जिवित रहते हुए ही लोगों के हित के लिए कार्य किया परन्तु मरने के बाद भी अपनी भस्म को देश के काम में लाने की इच्छा व्यक्त की।

उपसंहारः- मित्रों, सुकरात की गिनती मानसिक एवं साहसिक विचारों वाले व्यक्ति के रूप में होती है, जहर के प्याले को वो शांति और साहस के साथ पी गया था। उसने ईसा मसीह की तरह जरा भी कमजोरी व निराशा प्रकट नही की, जो सूली पर चढ़ाने के लिए ले जाये गए तो असहाय होकर आँखों में आंसू भरकर बोले "इलोई इलोई लामा सबाच थानी" अर्थात हे मेरे पिता, तूने मुझे क्यूँ त्याग दिया? महर्षि दयानन्द ने भी जोधपुर में जहर दिए जाने के कारण बहुत वीरता के साथ अथाह पीड़ा को सहन किया एवं एक भी शब्द दुःख भरा या कमजोरी प्रकट नही की और अंत समय तक परमात्मा पर अपने अटूट विश्वास को अडिग रखते हुए ''ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो'' कहकर अंतिम श्वास लिया। यदि महर्षि महाभारत काल बाद उत्पन्न ५ सर्वश्रेष्ठ व्यक्तियों में रखा जाये तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। ●●●

सत्यार्थप्रकाश की दार्शनिक विशेषतायें

-आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री

सत्यार्थ प्रकाश के लेखक जगद्विख्यात महानू आचार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती हैं। ऋषि साक्षात्कृत्धर्मा होते हैं। उनकी प्रत्येक बात महत्त्वपूर्ण होती है। अतः सत्यार्थप्रकाश में प्रत्येक बात तथ्य पूर्ण है और अपना विशेष महत्व रखती है। दार्शनिक दृष्टिकोण की कुछ बातें यहां पर लिखी जाती हैं।

सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में परमेश्वर के अनेक नामों का वर्णन है। उनमें विशेष और श्रेष्ठ नाम 'ओ३म्' है। 'ओ३म्' नाम से जगत् की तीनों स्थितियों का वर्णन मिल जाता है। 'ओ३म्' यह एक अक्षर है और समस्त जगत् उसका व्याख्यान है। परन्तु अन्य नामों के देने का प्रयोजन क्या था? उत्तर होगा कि एक परमेश्वर की उपासना को दृढ़ करने के लिए ही इस समुल्लास का यह विस्तार किया गया है।

दूसरी बात सत्यार्थ प्रकाश में यह मिलती है कि परमेश्वर को प्रत्यक्ष माना गया है। जिस प्रकार जगत् के पदार्थों में गुणों का प्रत्यक्ष इन्द्रियों को होता है द्रव्य का नहीं फिर भी द्रव्य का प्रत्यक्ष स्वीकार किया जाता है उसी प्रकार परमात्मा के ज्ञान-गुण और ज्ञानपूर्विका क्रिया का प्रत्यक्ष होने से परमेश्वर का भी प्रत्यक्ष है। यहां समझने की बात यह है कि इन्द्रियों में गुणों का ही प्रत्यक्ष होता है, द्रव्य का नहीं। द्रव्य का प्रत्यक्ष आत्मा और मन से होता है। इसी प्रकार परमेश्वर का भी प्रत्यक्ष आत्मा से होता है। प्रत्यक्ष लक्षण तो ऋषि ने न्याय का दिया परन्तु उसमें रहस्य क्या है- इसको भी खोल दिया और इस विशेष बात की ओर ध्यान को आकृष्ट किया।

तीसर बात कारण चर्चा की सत्यार्थप्रकाश में मिलती है। महर्षि ने निमित्त, उपादान और साधारण- ये तीन कारण स्वीकार किये हैं। वे निमित्त समवायि और असमवायि भी नवीन नैयायिकों की तरह कह सकते थे। परन्तु फिर भी साधारण को अलग कार्य मानना ही पड़ता। माता-पिता पुत्र के कौन से कारण हैं? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए यदि उन्हें निमित्त कारण माना जावे तो ठीक नहीं क्योंकि जो जिस कार्य का निमित्त कारण होता है उसका पूरा ज्ञान रखता है परन्तु माता-पिता को पुत्र का पूरा ज्ञान नहीं है। निमित्त कारण के रूप आदि कार्य में नहीं आते। परन्तु पुत्र में कई वस्तुयें माता-पिता से आती हैं। अतः ये निमित्त कारण नहीं- निमित्त कारण परमात्मा है। ये उपादान कारण हो नहीं सकते हैं क्योंकि उपादान कारण में ही अन्त में कार्य का लय है। मिट्टी का घड़ा टूट टूटकर बाद में मिट्टी रह जाता है। पुत्र के विना के बाद वह माता-पिता में लीन नहीं होता है। अतः माता-पिता उपादान कारण भी नहीं हैं। यदि इन्हें असमवायि कारण माना जावे तो भी ठीक नहीं क्योंकि तन्तु में समवेत रूप पट में आता है उसी प्रकार पुत्र माता-पिता में समवेत गुण नहीं हैं। ऐसी स्थिति में यही उत्तर बन सकेगा कि माता-पिता साधारण कारण हैं।

चौथी बात ध्यान देने की यह है कि सत्यार्थप्रकाश में जीव को कहीं पर अणु नहीं लिखा गया है। जीव को परिच्छन्न लिखा गया है। जिसका अर्थ यह है कि 'न अणु, न मध्यम और न विभु।' मध्यम परिमाण जीव हो नहीं सकता है क्योंकि फिर तो अनित्य ठहरेगा। विभु परिमाण भी नहीं है क्योंकि विभु तो परमेश्वर है और वह सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी भी है- जीव वैसा नहीं है। अणु परिमाण भी जीव नहीं है- क्योंकि अणु से भी वह सूक्ष्म है। एक अणु में दूसरा अणु नहीं समा सकता है परन्तु जीव अणु में भी रह सकता है। और एक अणु में कई जीव रह सकते हैं। इसका विशेष विवेचन आर्य सिद्धान्त सागर में हमने किया है।

पांचवीं बात यह मिलती है कि परमात्मा को प्रकृति और जीव से सूक्ष्म माना गया है। प्रकृति से जीव सूक्ष्म है और जीव से भी परमेश्वर सूक्ष्म है। परमेश्वर प्रेंति और जीव दोनों में व्यापक है। उद्योतकर आदि दार्शनिक जीव में परमात्मा को व्यापक नहीं मानते हैं। वे इस प्रश्न को कि आत्मा परमात्मा का व्याप्य व्यापक सम्बन्ध है वा सयोग सम्बन्ध है। अव्याकरणीय कहकर छोड़ देते हैं। परन्तु महर्षि ने व्याप्य व्यापक सम्बन्ध माना है।

-'आर्योदय' के अंक से साभार

पंजी०सं० आर.एन.आई.-२२४१/५७ -आर्यमित्र आर्यमित्र १५ फरवरी, २०२४ पोस्टल रजि.जी.पी.ओ. लखनऊ/एन.पी.-१४/२०१६-२१ एक प्रति ₹ ५.००

आर्य मित्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०९४१२६७८५७१, मंत्री-०९४१५३६५५७६, सम्पादक-९४५१८८१९७७
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

संस्थापित-1885 ओ३म् फोन नं0-0522-2286328
श्रीमद्दयानन्दाब्द-197 कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सेवा में,

.....

.....

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ का

140वाँ वार्षिक वृहद अधिवेशन

(अन्तरंग सभा एवं साधारण सभा की बैठक)

दिनांक-30 एवं 31 मार्च, 2024 तद्नुसार शनिवार एवं रविवार

(तिथि-चैत्र कृष्ण पक्ष पंचमी एवं षष्ठी) सम्वत्-2080

अधिवेशन स्थल- नवीन सभागार 5, मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

आर्य बन्धुओं/बहिनों,

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ का द्वि-दिवसीय वार्षिक अधिवेशन (साधारण सभा) आगामी दिनांक 30 एवं 31 मार्च, 2023 तद्नुसार शनिवार एवं रविवार को नवीन सभागार में सम्पन्न होगा, जिसमें पूरे प्रदेश की आर्य समाजों/जिला उप सभाओं/शैक्षणिक संस्थानों एवं गुरूकुलों आदि के प्रतिनिधि भाग लेंगे।

सभा द्वारा आर्य समाजों और जिला उप सभाओं को प्रतिनिधि चित्र डाक से भेज दिये गये हैं। आप अपनी आर्य समाजों एवं जिला सभाओं का विवरण चित्र में भरकर समस्त श्रोतों से आय का दशांश, सूदकोटि, वेद प्रचार फण्ड, प्रतिनिधि शुल्क एवं आर्य मित्र का वार्षिक शुल्क आदि 26 मार्च, 2024 तक जमा कर रसीद अवश्य प्राप्त कर लें। विशेष परिस्थिति में माननीय सभा प्रधान जी की अनुमति से ये चित्र एवं वांछित दशांश आदि के साथ प्रतिनिधि चित्र अधिवेशन से पूर्व अथवा अधिवेशन के समय जमा किये जा सकेंगे। जमा करने वाले धनराशि का आकलन निम्न प्रकार से होगाः-

(क) आर्य समाज के सभासद/सदस्यों का रू0 5/- प्रतिमाह प्रति सदस्य के हिंसाब से एक वर्ष के कुल चन्दे का दशांश।

(ख) आर्य समाज की परिसम्पत्तियों से यथाः- दुकानों/भवनों/अतिथि गृहों/ विद्यालयों का किराया, दान से प्राप्त धनराशि, किसी विक्रय से प्राप्त आय आदि का पूरे वर्ष में प्राप्त कुल धन का दशांश ।

(ग) सूदकोटि के रूप में रू0 25/-

(घ) वेद प्रचार फण्ड के रूप में प्रति सदस्य/सभासद रू0 2/- वार्षिक

(च) प्रतिनिधि शुल्क के रूप में प्रत्येक प्रतिनिधि रू0 25/- इसमें किसी भी समाज के पहले 11 सदस्य पर 1, 31 सदस्य पर 2 एवं प्रत्येक अगले 20 सदस्य पूर्ण होने पर अतिरिक्त प्रतिनिधि बन सकेंगे।

(छ) आर्य मित्र का वार्षिक शुल्क रू0 200/- अथवा आजीवन शुल्क के रूप में 2500/- के हिंसाब से।

(ज) जिला आर्य प्रतिनिधि सभाएं रू0 100/- दशांश एक मुश्त तथा रू0 100/- आर्य मित्र शुल्क एवं प्रतिनिधि शुल्क प्रति प्रतिनिधि रू0 25/- भी सभा में जमा करके रसीद प्राप्त कर लें।

(झ) प्रत्येक जिला सभा न्यूनतम 11 समाजों का प्रतिनिधित्व करने पर ही संगठित मानी जायेंगी।

इस प्रकार उपर्युक्त समस्त मदों को जोड़कर जो भी धन बनता हो, उसे चित्र के साथ भरकर सभा में जमा करा दें। यह धनराशि मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट अथवा नकद धनराशि के रूप में सभा में चित्र के साथ जमा की जा सकती हैं। मनीआर्डर, कोषाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के नाम भेजें। बैंक ड्राफ्ट आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ के नाम से भेजें। जमा धन की रसीद सभा से अवश्य ही प्राप्त कर लें।

सभा प्रांगण में तथा कुछ अन्य स्थानों पर सभी आगन्तुक/प्रतिनिधियों के ठहरने की व्यवस्था है साथ ही भोजन व्यवस्था सभा भवन प्रांगण में ही की गई है। कृपया ऋतु अनुकूल वस्त्रों को साथ रखें।

इस अधिवेशन में उच्च कोटि के सन्यासी/महात्मा, विद्वान/विदुषियों महोपदेशकों/ भजनोपदेशकों के अलावा विशिष्ट राजनेतागण भी पधारेंगे।

इस द्विदिवसीय अधिवेशन का संक्षिप्त कार्यक्रम निम्न प्रकार हैः-

दिनांक 30-03-2024 दिन शनिवार

प्रथम सत्र

प्रातःकाल 8.00 बजे	-	राष्ट्रभृत यज्ञ (सभा की भव्य यज्ञशाला में) भजन एवं प्रवचन।
प्रातःकाल 10.00 बजे	-	ध्वजारोहण- माननीय सभा प्रधान जी द्वारा।
प्रातःकाल 11.00 बजे	-	प्रदेशीय अन्तरंग सभा की बैठक।

1 बजे से भोजनावकाश

द्वितीय सत्र

अपराह्न	**2.00 बजे से**	- **साधारण सभा की बैठक प्रारम्भ।**
	,,	- माननीय सभा प्रधान एवं सभा मन्त्री का प्रतिनिधियों को सम्बोधन।
	,,	- वार्षिक वृत्तांत एवं आय-व्यय का लेखा प्रस्तुत।
	,,	- अनुमानित आय-व्यय का लेखा स्वीकारार्थ प्रस्तुत तथा अन्य आवश्यक विषय।
अपराह्न	3.00 बजे से	- आर्य महासम्मेलन प्रारम्भ।
सायंकाल	6.00 बजे	- सामूहिक संध्या।
रात्रिकाल	7.00 से 9.00	- आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस पर प्रदेश की समस्त आर्य समाजों में विविध आयोजनों पर चर्चा व सुझाव।
रात्रि	9.00 बजे	- शान्ति पाठ के उपरान्त प्रथम दिन का सम्मेलन समाप्त।

द्वितीय दिन दिनांक 31-03-2024 (रविवार)

तृतीय सत्र

प्रातःकाल	8.00 से 9.00 बजे तक	- राष्ट्रभृत यज्ञ, भजन एवं उपदेश आदि।
प्रातःकाल	10.00 बजे से	- राष्ट्र रक्षा जन जागृति सम्मेलन
दोपहर	1.00 बजे	- भोजन अवकाश

चतुर्थ सत्र

अपराह्न	2.00 बजे से	- आर्य समाज के व्यापक प्रचार-प्रसार की योजना एवं विधर्मियों की बढ़ती कट्टरता के विरूद्ध जन जागृति अभियान पर चर्चा।
सायं 4.00 बजे	-	धन्यवाद, शान्ति पाठ तथा अधिवेशन के समापन की घोषणा।

(देवेन्द्रपाल वर्मा)
प्रधान

(पंकज जायसवाल)
मन्त्री

(अरविन्द कुमार)
कोषाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ।

क्रमशः.....३ पर

बारह को सोम का, वीर्यशक्ति का ग्रहण करनेवाला बनाते हैं। सोमयज्ञों में बारह सोमपात्रों की तरह ये 'इन्द्रियों, मन व बुद्धि' भी बारह सोमपात्र कहते हैं।

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः।
तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ताऽआपः स प्रजापतिः -यजुर्वेद(३२/१)

भावार्थ : "वह अग्नि (उपासनीय) है,वह आदित्य (नाश-रहित) है, वह वायु (अनन्त बल युक्त) है वह चंद्रमा (हर्ष का देने वाला) है, वह शुक्र (उत्पादक) है, वह ब्रह्म (महान्) है, वह आपः (सर्वव्यापक) है, वह प्रजापति (सव प्राणियों का स्वामी) है।"

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।। यजुर्वेद(३१/१८)

भावार्थ : "यदि मनुष्य इस लोक-परलोक के सुखों की इच्छा करें तो सबसे अति बड़े स्वयंप्रकाश और आनन्दस्वरूप अज्ञान के लेश से पृथक् वर्तृतमान परमात्मा को जान के ही मरणादि अथाह दुःखसागर से पृथक् हो सकते हैं, यही सुखदायी मार्ग है, इससे भिन्न कोई भी मनुष्यों की मुक्ति का मार्ग नहीं है।"

परीत्य भूतानि परीत्य लोकान् परीत्य सर्वाः प्रदिशो दिशश्च।
उपस्थाय प्रथमजामृतस्यात्मनाऽऽत्मानमभि सं विवेश।।
यजुर्वेद(३२/११)

भावार्थ : "हे मनुष्यो! तुम लोग धर्म के आचरण, वेद और योग के अभ्यास तथा सत्सङ्ग आदि कर्मों से शरीर की पुष्टि और आत्मा तथा अन्तःकरण की शुद्धि को संपादन कर सर्वत्र अभिव्या परमात्मा को प्राप्त हो के सुखी होओ।"

हिरण्यगर्भः समवर्तृतताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽ आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।। यजुर्वेद(१३/४)

भावार्थ : "हे मनुष्यो! तुम को योग्य है कि इस प्रसिद्ध सृष्टि के रचने से प्रथम परमेश्वर ही विद्यमान था, जीव गाढ़ निद्रा सुषुप्ति में लीन और जगत् का कारण अत्यन्त सूक्ष्मावस्था में आकाश के समान एकरस स्थिर था, जिसने सब जगत् को रच के धारण किया और जो अन्त्य समय में प्रलय करता है, उसी परमात्मा को उपासना के योग्य मानो।"

ओर भी बहुत सारी मंत्र हैं वेदों में जहां लिखा है कि ईश्वर एक ही है।

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक-पंकज जायसवाल भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है-सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।